Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 44 अंक-01 | सम्पादक मुन्ना कुमार शर्मा | दिनांक 25 मार्च से 31 मार्च 2020 तक | वार्षिक शुल्क 150 रुपये
कल्पादि सम्वत् 1972949120 | चैत्र शुक्ल एकम् से चैत्र शुक्ल सप्तमी सम्वत् 2077 तक | पृष्ठ संख्या 12

ईश्वर से कैसे मिले... पृष्ठ- 2
हृदय रोग में कोलेस्ट्रोल.. पृष्ठ- 4
हिन्दी विरोध की खोखली... पृष्ठ- 6
हिन्दुस्थान और हिन्दुओं.. पृष्ठ- 7
फिर उठा कांग्रेस में... पृष्ठ- 12

शुभकामनाएं

नवविक्रमी सम्वत् (2077) एवं नवरात्र के अवसर पर विश्वभर के हिन्दू समाज को कोटिशः मंगल कामनायें। नववर्ष आपके जीवन को हर्ष से आलोकित कर दें।

चन्द्रप्रकाश कौशिक (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | मुन्ना कुमार शर्मा (राष्ट्रीय महासचिव) | वीरेश त्यागी (राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री)

वीर सावरकर के नाम पर रखा गया जेएनयू में सड़क का नाम

हिन्दू महासभा ने जताई प्रसन्नता

● संवादाता ●

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में सुबनसर हॉस्टल के समीप एक सड़क का नाम बदलकर वीर सावरकर मार्ग कर दिया गया। जिसके बाद अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने इस पर प्रसन्नता व्यक्त की है। अखिल भारत हिन्दू शेष पृष्ठ 10 पर

हिन्दू महासभा ने मध्यप्रदेश विधानसभा का तुरंत चुनाव कराने की मांग की, कहा यहां लोकतंत्र की हत्या हो रही है

● संवाददाता ●

उज्जैन, मध्य प्रदेश। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा, राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री वीरेश त्यागी एवं प्रदेश संयोजक श्री मोहन लाल वर्मा ने उज्जैन, मध्य प्रदेश स्थित स्वर्णकार धर्मशाला में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने मध्यप्रदेश विधानसभा को भंग कर प्रदेश में नया जनादेश लेने की मांग की है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में भाजपा एवं कांग्रेस द्वारा लोकतंत्र की हत्या की जा रही है। दोनों पार्टीयां विधायकों के खरीद–फरोख्त एवं अदला–बदली का व्यापार कर रही हैं, दोनों पार्टियों को केवल सत्ता की चिंता है, जनता की भलाई से कुछ लेना देना नहीं है। प्रदेश के राजनैतिक दलों का जनता में विश्वास पूर्णतः उठ चुका है। इसलिये अब नया जनादेश के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है। प्रदेश में जनता पस्त एवं नेता मस्त हैं। राजनैतिक दलों को विधायकों के खरीद–फरोख्त के अतिरिक्त जनता से कोई लेना देना नहीं है। श्री शर्मा ने कहा है कि अब अखिल भारत हिन्दू महासभा मध्यप्रदेश में नया राजनैतिक विकल्प देगी। उन्होंने कहा कि हिन्दू महासभा प्रदेश के कई सीटों पर चुनाव लड़ेगी तथा जनता के सामने एक राष्ट्रवादी, हिंदूवादी सशक्त विकल्प देगी। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री वीरेश त्यागी ने कहा कि जहां पूरा देश कोरोना को समाप्त करने के लिए जंग लड़ रहा है, मध्य प्रदेश शासन पंगु बना हुआ है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस एवं भाजपा को केवल सत्ता से मतलब है। वहीं स्वर्णकार शेष पृष्ठ 10 पर

ईश्वर से कैसे मिले?

स्वामी सर्वदानन्द

उपासना कांड मनुष्य बिना अहंकार के रहे। सत्कर्म के करने से मनुष्य को जो अभिमान–सा होता है, उसका नाम अहंकार है–संस्कृत भाषा में इसे अहंता (अहंभाव) अथवा 'ममता' कहा है। कोई भी सत्कर्म अहंकार के साथ मिलकर अपने असली स्वरूप में नहीं रहता, परन्तु वह किया हुआ कर्म न किये के तुल्य हो जाता है। विद्वानों ने इस दोष को दूर करने के लिए बहुत सुन्दर उपदेश दिये हैं। उनका वचन है कि यदि बाए हाथ से कोई शुभ काम किया जाये तो उसका ज्ञान दाएँ हाथ को भी न हो। यदि मस्तिष्क किसी के साथ भला करे तो मन इससे बेखबर रहे। ये वचन मनुष्य को इस बुरी आदत (अहंकार) को छुड़ाने के लिए काफी है। मनुष्य से यदि कोई अच्छा काम हो जाता है, तो वह अपनी प्रशंसा सुनने के लिए हर ओर कान लगाए रखता है। यदि कोई उसकी बड़ाई न करे तो फिर विवश होकर लोगों के सामने अपनी प्रशंसा स्वयं ही करने लग जाता है। यह एक ऐसा बड़ा बन्धन है, ऐसी कड़ी जंजीर है कि मनुष्य का इससे स्वतन्त्र होना बहुत कठिन है। अपनी प्रशंसा चाहना अपने आपमें एक बड़ा भारी पाप है। इसके प्रभाव से रसायन भी निष्फल हो जाता है।

बीज अपने को छिपाता है तो वृक्ष पैदा होता है और जो बीज बाहर पड़ा रहता है, वह बीज या तो पददलित हो जाता हे, या उसे पशु–पक्षी खा जाते हैं। इसको संस्कृत भाषा में निष्काम कर्म कहा गया है। प्रभु–भक्तों के मत में इसे नाश होने वाला लिखा है। जैसे धान के ऊपर के छिलके को अलग कर देने से फिर वह खाने के काम तो आता है, परन्तु आगे उत्पत्ति करने योग्य नहीं रहता। सत्य कर्म के साथ प्रशंसा का लगा हुआ छिलका मनुष्य को संसार में बार–बार लाने का कारण बनता ही रहता है। इसे दूर कर देने से नाशवान् का नाश हो जाता है और शेष संसार में रह जाते हैं। प्रभु भक्त इस बात को जानकर कर्म करते हैं और सत्य–पथ में जा लीन होते हैं, फिर साक्षात्कार में जाकर आराम पाते हैं। इसलिए अपनी प्रशंसा आप करना भारी भूल है। लिखा है–

तारीफ अपनी आप मत करना कभी तू भूलकर,
ऐब अपना देख, ऐबे गैर पर मत कर नजर।

जो मनुष्य इस बुरी आदत वाला है, वह अन्धेरे में हैं, उच्च से उच्च मनुष्य भी अपनी प्रशंसा करने से छोटा और पवित्र होने पर भी खोटा हो जाता है। यह एक प्रकार का पाप है, जो मनुष्य में परदोष निकालने का स्वभाव बढ़ाता है और संसार में उसे नाकारा बनाता है। स्वार्थी पुरूष अच्छे मनुष्यों के संग से घबराता है और कोई विचारशील मनुष्य उसे समीप नहीं लाने देता। स्वार्थ सत्य–पथ से हटाकर कुमार्ग पर चलाता है और फिर दुःख को समीप लाता है। बुद्धिमान मनुष्य वह है, जो अपने दुर्गुणों पर ध्यान रखे और दूसरे के दुर्गणों की पड़ताल न करे।

स्वार्थ से काम सारे दुनिया में हैं बिगड़ जाते,
गुप्त कहाँ वह भेद जिसे सभा में हैं सुनाते।

स्वार्थ से सब काम बिगड़ जाते हैं। इससे चोट खाकर फिर वे बनने में नहीं आते। जैसे किसी भेद को जन–साधारण की सभा में सुनाकर यह बताना कि यह गुप्त भेद है, किसी से मत कहना, इस वचन से लोगों को हँसाना और अपने को मूर्ख बनाना है। जो मनुष्य स्वार्थी हो जाता हे, वह स्वयं अपने आपको धोखा देता है और वह शुभ आचरण को बेचकर दुराचरण को मोल लेता है। यह स्वार्थ एक बला है जो शरारत को जगाती हे, जो कभी दूर नहीं होती। स्वार्थ एक आत्मिक व्याधि है, जिसके साथ असत्य बोलना भी शामिल है। स्वार्थ को पूरा करने के लिए झूठ और धोखा देना भी उसका स्वभाव हो जाता है शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : मेष राशि के जातकों की पारिवारिक स्थिति के लिए यह सप्ताह ठीक रहेगा। परिजनों से चला आ रहा मनमुटाव दूर होगा। बच्चों के साथ अच्छा समय बिताएंगे। नौकरी में प्रमोशन, व्यापार में वृद्धि और नए कार्य का प्रस्ताव मिलेगा। वाहन सुख में वृद्धि होगी।

वृषभ : वृषभ राशि के जातकों को थोड़ी परेशानी आ सकती है, खासकर अपने पारिवारिक जीवन में तनाव आ सकता है। जीवनसाथी से मतभेद हो सकता है। कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय परिवारजनों की राय महत्व रखेगी।

मिथुन : मिथुन राशि के जातकों के लिए मार्च का यह सप्ताह बहुत महत्वपूर्ण और निर्णायक साबित होने वाला है। इस राशि की महिलाओं का घर–परिवार की बुजुर्ग महिलाओं से मनमुटाव होगा। व्यापारी वर्ग को व्यापार वृद्धि का मौका आएगा, अवसर पहचानकर आगे बढ़ें।

कर्क : कर्क राशि के युवाओं के लिए यह सप्ताह मिलाजुला रहेगा। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे युवाओं को कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। चिकित्सा और दवाई के पेशे से जुड़े व्यक्ति लाभ कमाएंगे। पद–प्रतिष्ठा में वृद्धि, सम्मान–यश की प्राप्ति होगी।

सिंह : सिंह राशि के जातकों को इस सप्ताह भौतिक सुखों में कमी महसूस होगी। आर्थिक मामले गड़बड़ा सकते हैं। शेयर, कमोडिटी, इंश्योरेंस आदि में निवेश करते समय सावधानी रखें। इस सप्ताह अगर किसी को पैसा उधार दिया तो वापस लेने में परेशानी आएगी। स्वास्थ्य को लेकर सजग रहें।

कन्या : कन्या राशि के जातकों के लिए सप्ताह ठीक रहेगा। घर–परिवार में माहौल सौहार्द्रपूर्ण रहेगा। परिजनों से चले आ रहे मतभेद दूर होंगे। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। सेहत में सुधार आएगा, लेकिन परिवार के किसी कार्य पर खर्च अधिक हो जाने से मन में खिन्नता आ सकती है।

तुला : तुला राशि के लिए सप्ताह उत्तम है। आपको भौतिक सुख–साधनों की प्राप्ति होने के संकेत हैं। परिवार और कार्यस्थल पर आपकी अहमियत बढ़ेगी। मान–सम्मान में वृद्धि होगी। किसी महत्वपूर्ण कार्य के पूरा हो जाने से राहत महसूस करेंगे।

वृश्चिक : वृश्चिक राशि के जातकों को इस सप्ताह कार्य की अधिकता रहेगी। परिवार में माहौल सुखद रहेगा। मानसिक परेशानियां, चिंता कम होगी। कोई महत्वपूर्ण कार्य रूक सकता है, लेकिन परेशान न हों, जल्द ही शुरू होगा। प्रेम–प्रसंगों में सफलता, पति–पत्नी के रिश्ते मधुर बनेंगे।

धनु : धनु राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह उत्तम है। भौतिक सुख–साधनों की प्राप्ति होगी। इन वस्तुओं के व्यापार से लाभ कमा सकते हैं। स्त्रियों को उपहार मिल सकता है। पारिवारिक स्थिति में मान–सम्मान प्राप्त होगा। मित्रों के साथ मौज–मस्ती का प्रोग्राम बन सकता है।

मकर : मकर राशि के लिए इस सप्ताह कुछ अच्छी खबरें आ सकती हैं। नौकरी की तलाश कर रहे लोगों को मनमाफिक ऑफर आ सकता है। युवाओं, फ्रेशर्स को किसी बड़ी कंपनी से जॉब ऑफर आएगा। हालांकि कुछ लोग मानसिक रूप से अस्थिरता महसूस करेंगे।

कुम्भ : कुंभ राशि के लिए पिछले दिनों से चली आ रही परेशानियां समाप्त होने का समय रहेगा। मानसिक रूप से स्वयं को मजबूत रखने की आवश्यकता है। इस सप्ताह स्वास्थ्य को लेकर कोई दिक्कत आ सकती है। हृदय संबंधी कोई रोग उभर सकता है।

मीन : मीन राशि के जातकों के लिए सप्ताह ठीक है, बस आपको अपनी वाणी पर संयम रखना होगा। किसी व्यक्ति को कोई ऐसी बात ना कहें जिससे उसके दिल को चोट पहुंचे। **पं० दीनानाथ तिवारी**

श्रीरामचरितमानस

जम गन मुँह मसि जग जमुना सी। जीवन मुकुति हेतु जनु कासी।।
रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी। तुलसीदास हित हियँ हुलसी सी।।

यमदूतों के मुख पर कालिख लगाने के लिये यह जगत् में यमुनाजी के समान है और जीवों को मुक्ति देने के लिये मानो काशी ही है। यह श्रीरामजी को पवित्र तुलसी के समान प्रिय है और तुलसीदास के लिये हुलसी (तुलसीदासजी की माता) के समान हृदय से हित करनेवाली है।।६।।

सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी। सकल सिद्धि सुख संपति रासी।।
सदगुन सुरगन अंब अदिति सी। रघुबर भगति प्रेम परमिति सी।।

यह रामकथा शिवजी को नर्मदाजी के समान प्यारी है, यह सब सिद्धियों की तथा सुख–सम्पत्तिकी राशि है। सद्गुणरूपी देवताओं के उत्पन्न और पालन–पोषण करने के लिये माता अदिति के समान है। श्रीरघुनाथजी की भक्ति और प्रेम की परम सीमा–सी है।।७।।

दो०- रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु।।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु।।३१।।

तुलसीदासजी कहते हैं कि रामकथा मन्दाकिनी नदी है, सुन्दर (निर्मल) चित्त चित्रकूट है, और सुन्दर स्नेह ही वन है, जिसमें श्रीसीतारामजी विहार करते हैं।।३१।।

रामचरित चिंतामनि चारू। संत सुमति तिय सुभग सिंगारू।।
जग मंगल गुनग्राम राम के। दानि मुकुति धन धरम धाम के।।

श्रीरामचन्द्रजी का चरित्र सुन्दर चिन्तामणि है और संतों की सुबुद्धिरूपी स्त्री का सुन्दर श्रृंगार है। श्रीरामचन्द्रजी के गुणसमूह जगत् का कल्याण करने वाले और मुक्ति, धन, धर्म और परमधाम के देनेवाले हैं।।१।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 25 मार्च से 31 मार्च 2020 तक

अध्यक्षीय

जनसंख्या नियंत्रण नीति लाने की तैयारी में योगी सरकार

जिस हिसाब से उत्तर प्रदेश में तैयारियों की खबरें आ रही है उससे यह लगभग निश्चित सा लग रहा है कि प्रदेश की योगी आदित्य नाथ सरकार जनसंख्या नियंत्रण नीति प्रारम्भ कर सकती है। वर्तमान सरकार तीन वर्ष बीत जाने के बाद ही सही अब जनसंख्या नीति बनाए जाने को लेकर प्रभावी नजर आ रही है। प्रदेश का स्वास्थ्य महकमा इस पर तेजी से कार्य कर रहा है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शपथ ग्रहण करने के बाद से ही कई मौकों पर प्रदेश में जनसंख्या 'विस्फोट' पर चिंता जताते हुए नई जनसंख्या नीति बनाने की बात कहते रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि बढ़ती जनसंख्या और सीमित संसाधनों के कारण प्रदेश की योगी सरकार जनकल्याण के कार्यक्रम सही तरीके से लागू नहीं कर पा रही है। यदि उत्तर प्रदेश को एक देश माना जाये तो यह दुनिया का ५वां सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन चुका है। वर्ष २०११ की अंतिम जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश की जनसंख्या २१ करोड़ के करीब थी जो अब बढ़कर २३ करोड़ तक पहुंच गई होगी। जनसंख्या नियंत्रित नहीं होने और सीमित संसाधनों को देखते हुए यूपी में जनसंख्या नीति बनाने की मांग लम्बे समय से उठती रही है, यह स्थिति तब है जबकि उत्तर प्रदेश की कुल आबादी से काफी छोटे राज्यों– आंध्र प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, ओडिशा और राजस्थान में जनयसंख्या नीति लागू है। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश में लम्बे समय से चल रही वोट बैंक की सियासत और मुस्लिम तुष्टिकरण के चलते यहां अभी तक कोई भी सरकार जनसंख्या नियंत्रण नीति लागू करने की हिम्मत नहीं जुटा सकी है, लेकिन योगी सरकार तीन वर्ष बीत जाने के बाद ही सही अब जनसंख्या नीति बनाए जाने को लेकर एक्टिव नजर आ रही है। प्रदेश का स्वास्थ्य महकमा इस पर तेजी से कार्य कर रहा है। राज्य के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री जय प्रताप सिंह ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि जनसंख्या अधिक होने से जन कल्याणकारी नीतियां बनाने में दिक्कत होती है। यहां यह बताना जरूरी है कि १९५० से देश के साथ–साथ प्रदेश में भी परिवार नियोजन कार्यक्रम शुरू हुआ था, लेकिन जैसे सरकारी कार्यक्रम चलते हैं वैसे ही ये भी चला। इसके चलते जनसंख्या बढ़ती गई पर इसके सापेक्ष संसाधनों का विकास इतनी तेजी से नहीं हुआ। सरकारी योजनाएं जनसंख्या के अनुसार ही बनाई जाती हैं। इसलिए अब जरूरी है कि इस विषय पर नीति बने। सरकार इसके लिए पूरी तरह से कटिबद्ध है। जनसंख्या नियंत्रण को लेकर योगी सरकार अन्य राज्यों की नीतियों का अध्ययन कर रही है। प्रयास यह है कि पूरे देश की जनसंख्या नियंत्रण नीति का अध्ययन कर एक ऐसी नीति बनायें, जो सबसे बेहतर हो। सूत्रों के मुताबिक सरकार की नीति में प्रावधान हो सकता है कि तीन से अधिक बच्चों के होने पर सम्बन्धित व्यक्ति सरकारी नौकरी के लिए पात्र नहीं होगा। वर्ष २०११ की अंतिम जनगणना के अनुसार प्रदेश में पूरे देश की १६.५१ प्रतिशत जनसंख्या रहती है। वर्ष २००१ में यह प्रतिशत १६.१६ प्रतिशत था। राज्य में ६४ ऐसे शहर हैं, जिनकी जनसंख्या एक लाख से अधिक है। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी जनसंख्या नियंत्रण को लेकर अपील कर चुके हैं। पिछले वर्ष ही १५ अगस्त के मौके पर उन्होंने कहा था कि हमारे यहां जो जनसंख्या विस्फोट हो रहा है, ये आने वाली पीढ़ी के लिए अनेक संकट पैदा करता है। अब इस तरह की नीति बनाने वाला उत्तर प्रदेश देश का पहला प्रदेश बन सकता है।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

कोरोना ने हिला दी दुनिया

समूची दुनिया में एक बीमारी ने उथल–पुथल मचा रखी है। इससे जहां दुनिया के कई देशों का आर्थिक ढांचा डगमगाने लगा है वहीं राजनैतिक परिदृश्य भी सहमा हुआ है लेकिन लोगों को यकीन है कि सारी उथल–पुथल के बावजूद स्थितियां देर–सबेर सामान्य हो जाएंगी। खासकर भारत में लोगों के मिजाज का अंदाजा शेयर बाजार का हाल देखकर लगाया जा सकता है। बाजार गिरता है तो कुछ देर के लिए खरीद–बिक्री बंद हो जाती है। फिर कारोबार खुलते ही बिकवाली शुरू होती है तो बाजार तीर की तरह ऊपर चढ़ जाता है। यानी बुरी खबरें असल चीज नहीं हैं। हममें से ज्यादातर लोग अपने जीवनकाल की पहली विश्वव्यापी महामारी देख रहे हैं, चिंता तो होगी ही। असल चीज है बुरी खबरों की मीयाद। यह कि ये कितने लंबे समय तक जारी रहती हैं। दुनिया की एक फीसदी अधिक अमीर आबादी में से हर एक ने पिछले दस–पंद्रह दिनों में अपने अरबों डॉलर गंवा दिए हैं। लेकिन उन्हें यकीन है कि यह किस्सा बहुत लंबा नहीं चलेगा। बुरी खबरों में फंसने के बजाय यह वक्त उन्होंने सुदूर, शांत जगहों पर छुट्टियां मनाते हुए बिताने का फैसला किया है। ज्यादातर ऊंचे पहाड़ों, अलग–थलग द्वीपों और न्यूजीलैंड के सुरम्य ठिकानों की ओर रवाना हो रहे हैं। उनके इस फैसले की झलक प्राइवेट जेट्स से जुड़े ताजातरीन आंकड़ों में मिल रही है, जहां हाल–फिलहाल औसत की दस गुनी डिमांड दर्ज की गई है। कोरोना इटली में अगले एक के मध्य तक अगर जन्मी महामारी काबू दुनिया यह झटका लेगी। चीन का अभी रहा है कि यह काम का नया वुहान बने महीने में, यानी अप्रैल कोरोना वायरस से में आ जाती है तो हंसते– खेलते झेल तक का तजुर्बा बता इंसानी क्षमता के दायरे में है। उसने १ करोड़ १० लाख की आबादी वाले अपने उभरते हुए शहर वुहान के लगभग हर इंसान को महीना भर घर में रहने को मजबूर कर दिया। वहां के कुल ६५ हजार लोगों में यह वायरस पाया गया। १४ हजार लोगों में बीमारी इतनी बढ़ी कि उन्हें हॉस्पिटलाइज करना पड़ा। लगभग ३,२०० लोगों को आईसीयू में ले जाने की जरूरत पड़ी, जिनमें बमुश्किल दो–ढाई सौ बचाए जा सके, बाकी की मृत्यु हो गई। यह आंकड़ा भयानक है, लेकिन चीन जैसे १ अरब ४० करोड़ की आबादी वाले देश में इतनी कुर्बानी देकर भी यह भयानक बीमारी अगर नियंत्रित की जा सके तो बाकी दुनिया इसे अपने लिए मिसाल क्यों नहीं बना सकती? जाहिर है, क्या चीन में बीमारी नियंत्रित की जा चुकी है? क्या दक्षिण कोरिया में यह पूरी तरह काबू में आ गई है, जिसने लगभग एक महीने तक चीन के बाद बीमारी की सबसे बुरी खबरें देने के बावजूद, लगभग ८ हजार लोगों में कोरोना वायरस की पुष्टि हो जाने के बावजूद मौतों की संख्या ७१ से आगे नहीं बढ़ने दी है? इस सवाल का जवाब हमें अगले एक महीने में मिल जाएगा। एक अनुमान है कि कोरोना वायरस भी आखिर एक वायरस ही है। सारे वायरस गर्मी तेज होने के साथ निष्क्रिय होने लगते हैं तो यह बिल्कुल संभव है कि चीन और दक्षिण कोरिया में उनका काबू में आना सरकारी कोशिशों से ज्यादा मध्य मार्च की चटख धूप के चलते हो, और अगले कुछ दिनों में ऐसा ही ईरान, इटली और बाकी दुनिया में भी होने लगे। ऐसा हुआ तो अगले एक–दो हफ्तों में अच्छी खबरें आने लगेंगी। बहरहाल, यह सब हो गया तो भी कुछ चीजें इतनी जल्दी और कुछ हमेशा के लिए पहले जैसी नहीं होंगी। जैसे, सऊदी अरब ने महामारी के चलते कच्चे तेल का बाजार ठंडा रहने की बात कहकर ओपेक की तर्ज पर रूस को भी उत्पादन कटौती के लिए मनाने की कोशिश की। रूस नहीं माना तो उसने अपना उत्पादन बढ़ाने और कीमत घटाने की घोषणा कर दी। ३० डॉलर प्रति बैरल की दर से बिकने वाले कच्चे तेल की कीमत महामारी खत्म होने पर धीरे–धीरे ऊपर चढ़ सकती है। लेकिन अगर यह जाड़े आने तक नीचे ही रह गई तो अमेरिका को दुनिया का सबसे बड़ा तेल उत्पादक बनाने वाली शेल ऑयल इंडस्ट्री पर हमेशा के लिए ताला पड़ जाएगा। पूरी दुनिया का पर्यटन उद्योग, एयरलाइंस, होटल इंडस्ट्री, शो बिजनेस और गाड़ी या कमरा शेयर करने की उबर–ओयो नुमा जिग इकॉनमी घोर संकट में है। इनमें से जो भी धंधे बैंकों से लिए गए कर्ज के दम पर चल रहे हैं, वे डूबे तो अपने साथ कई वित्तीय संस्थाओं को भी ले मरेंगे। मामले का इस दिशा में बढ़ना इस पर निर्भर करता है कि महामारी का असर कितने दिन रहता है। अलबत्ता चीन की बनी–बनाई कहानी का बिगड़ना महामारी की अवधि पर निर्भर नहीं करता। खैर! आने वाला समय यह निश्चित करेगा कि हिली हुई दुनिया फिर किस तरह संवर सकेगी।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

हृदय रोग में कोलेस्ट्रोल की भूमिका

आधुनिक युग में भाग दौड़ भरी अनियमित दिनचर्या के चलते आज के जीवन में तनाव बढ़ रहा है। इससे लोगों के आहार में समयबद्धता भी नहीं रही और घर के बाहर खाने का प्रचलन भी ज्यादा हो गया है। जिससे अधिक वसा युक्त आहार तथा विभिन्न प्रकार के जंक फूड, फास्ट फूड, किस्म के भोजन करने से अनेक शारीरिक व मानसिक बीमारियाँ व मोटापा बढ़ रहा है। इससे कोलेस्ट्रोल, उच्च रक्तचाप, डायबिटीज जैसे रोग भी ज्यादा हो रहे हैं कोलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ने से हृदय रोग का खतरा भी बढ़ जाता है। हमारे देश की पूरी आबादी में २५ प्रतिशत लोग कोलेस्ट्रोल की बीमारी से ग्रस्त हैं। हृदय रोग एन्जाइना (कोरोनरी आर्टरीडिजीज) का मुख्य कारण हृदय की रक्त धमनियों में कोलेस्ट्रोल का जमाव है। इसके कारण उच्च रक्तचाप, हृदय रोग व एन्जाइना आदि होता है।

कोलेस्ट्रोल क्या है? : यह मोम की तरह चर्बीयुक्त पदार्थ होता है। कोलेस्ट्रोल रक्त में अघुलनशील होता है। कोलेस्ट्रोल का कार्य उन ऊतकों के निर्माण में सहयोग करना है, जो शरीर में कोशिकाओं की दीवार बनाते हैं। शरीर के हारमोन्स के संतुलन में भी कोलेस्ट्रोल का योगदान होता है।

जीवन के लिए अनिवार्य : लोग अक्सर कोलेस्ट्रोल को जहर समझते हैं। यह सच है कि कोलेस्ट्रोल जीवन के लिए अनिवार्य भी है यह शरीर की प्रत्येक कोशिका में विद्यमान है। उसी से कोशिकाओं की चारदीवारी (सेल मेम्ब्रेन) और तंत्रिकाओं को इन्सुलेशन मिल पाता है। उसी से स्त्री–पुरुष में सेक्स हार्मोन और कार्टिनसाल हार्मोन बन पाते हैं। मानव शरीर में उपस्थित ८० प्रतिशत कोलेस्ट्रोल शरीर के भीतर यकृत (लीवर) में ही बनता है और मात्र २० प्रतिशत ही भोजन के माध्यम से शरीर में पहुँचता है।

यह यकृत में बनने वाले पाचक पित्त (बाइल जूस) का भी महत्त्वपूर्ण अंश है। कोलेस्ट्रोल शरीर के लिए जरूरी भी है किंतु जैसे ही शरीर में इसकी मात्रा बढ़ती है तो शरीर की मुश्किलें बढ़ती हैं। कोलेस्ट्रोल दो प्रकार के होते है–

१. एच॰डी॰एल॰ (हाई डेंसिटी लिपोप्रोटीन)

२. एल॰डी॰एल॰ (लो डेंसिटी लिपोप्रोटीन)

एच॰डी॰एल॰ को अच्छा कोलेस्ट्रोल माना गया है, जो हृदय रोग से सुरक्षा प्रदान करता है व एल॰डी॰एल॰ को खराब कोलेस्ट्रोल माना गया है। सामान्य तौर पर एल॰डी॰एल॰ की मात्रा १०० एम॰जी॰ से कम ही रहना सही है एच॰डी॰एल॰ पुरुषों में ४० और महिलाओं में ४५ एम॰जी॰ से ऊपर रहना आदर्श माना गया है। इससे कम होने पर अन्य कारणों के न रहते हुए एच॰डी॰एल॰ हृदय रोग का कारण बन जाता है।

लिपिड–कोलेस्ट्रोल और ट्राईग्लीसराइड् के साथ खून में स्थित अनावृत्त वसा का नाम लिपिड है। इन वसाओं का परीक्षण लिपिड प्रोफाइल कहलाता है। सच यह है कि हमारे खून में कोलेस्ट्रोल एक विशिष्ट प्रोटीन से बंधा रहता है इस गठबंधन का नाम लाइपाप्रोटीन है।

दुष्प्रभाव–हमारे रक्त में कोलेस्ट्रोल का कुल स्तर १८० मिग्रा या कम हो, तो उत्तम है। कोलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ने से शरीर की छोटी और मध्यम दर्जे की धमनियों पर बुरा असर पड़ता है। उनकी दीवारों पर कोलेस्ट्रोल जम जाता है, उनका अंदरूनी आयतन सिकुड़ जाता है और उनमें खून का दौरा घट जाता है। दिल की कोरोनरी धमनियाँ सिकुड़ने पर एंजाइना हो सकता है। पैरों की धमनियाँ तंग हो जायें तो चलने–फिरने पर पिंडलियों में जोर का दर्द उठने लगता है। पुरुषों में पुरुषत्वहीनता हो सकती है। कोलेस्ट्रोल के जमाव से धमनियों की समतलता भी बिगड़ जाती है। यह प्रक्रिया एथिरोस्क्लो–रोसिस कहलाती है। इसके परिणामस्वरूप रक्त कणों का थक्का बनने का जोखिम बढ़

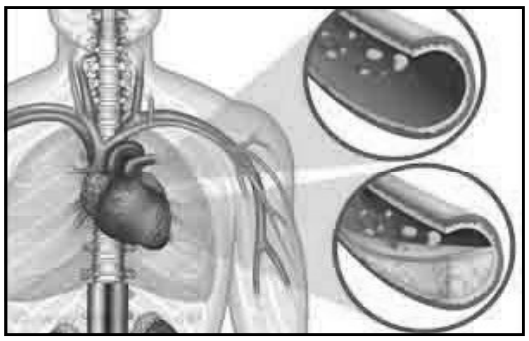

जाता है। तंग हुई कोरोनरी धमनी में थक्का फंस जाए तो दिल की पेशियों में खून का दौरा अचानक रुक जाने से दिल का दौरा पड़ सकता है। इस प्रकार मस्तिष्क की धमनी रुक जाने पर लकवा हो सकता है।

कोलेस्ट्रोल वृद्धि के कारण :

१. कोलेस्ट्रोल खाद्य पदार्थों जैसे मांस, अंडे, दूध और दुग्ध उत्पादों मक्खन, मलाई, घी, वसायुक्त, तलेभुने पदार्थ, नमकीन आदि में यह अधिक मात्रा में होता है। वनस्पति खाद्यों में कोलेस्ट्रोल नहीं होता।

२. शरीर में यकृत द्वारा अधिक कोलेस्ट्रोल का उत्पादन होना आदि। अधिक वजन, मोटापा से उच्च रक्तचाप और कोलेस्ट्रोल का स्तर बढ़ता है।

कोलेस्ट्रोल और हृदय रोग : अगर कोई व्यक्ति व्यायाम नहीं करता, रेशा–रहित भोजन का अधिक सेवन करता है, वसा का अधिक सेवन करता है, धूम्रपान करता है, तनाव में रहता है तो वह स्वयं हृदय रोगी बनने का सबसे प्रमुख कारण कोलेस्ट्रोल है। तनाव का हृदय पर बहुत बुरा प्रभाव होता है। दरअसल जब तनाव होता है तो शरीर की कोशिकाओं से ऊर्जा का क्षय होता है और उसी समय शरीर की हार्मोन ग्रंथियों से एक विशेष प्रकार का हार्मोन निकलकर रक्त में पहुँचता है जिसे केटाकेलामिन कहते हैं। चूँकि वसा से ही ऊर्जा मिलती है यह शरीर में उपस्थित वसा की ह्रास हुई ऊर्जा की क्षति पूर्ति करने हेतु शरीर के अन्य हिस्सों के अलावा हृदय में ले जाता है। इस रोग को पैदा कर देता है। इसे ही हृदय ध्मनी अवरोध भी कहते हैं। रक्त धमनियों से कोलेस्ट्रोल का जमाव करीब ३० वर्ष की उम्र से ही आरंभ हो जाता है और उम्र बढ़ने पर जमाव अधिक हो जाता है तब मरीज को इसके लक्षणों का अनुभव होता है। इससे हार्ट अटैक या एन्जाइना की गंभीर स्थिति पैदा होती है।

कोलेस्ट्रोल अधिक जमा होने पर एलोपैथी में एन्ज्योप्लास्टी भी की जाती है। अधिक अवरोध होने पर इसका इलाज बाईपास सर्जरी है जो कि बहुत ही महंगी व जोखिमपूर्ण भी है। इसके बाद भी कोलेस्ट्रोल जमाव को रोका नहीं जा सकता है। चिकित्सा विशेषज्ञों ने अपने शोधों द्वारा कोलेस्ट्रोल को कम करने के अनेकों उपाय बताये हैं। योग प्रकृति चिकित्सा में आहार और उपचार के द्वारा सुधरी हुई जीवनशैली अपनाकर कोलेस्ट्रोल को नियंत्रित किया जा सकता है।

हृदय रोग की संभावना को कम करने के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है व्यायाम। प्रतिदिन ३०–४० मिनट का व्यायाम, योग, प्राणायाम, ध्यान आदि हृदय को सुरक्षा प्रदान करते हैं। कम वसा व कम कोलेस्ट्रोल वाला आहार लेना चाहिए।

अपने आहार में अधिक क्षारीय पदार्थों का सेवन जैसे–फल, सब्जियाँ, सलाद, अंकुरित अन्न, सूप, नींबू, शहद, पानी का सेवन करें।

५० ग्राम जई का चोकर या जौ का सेवन (दलिया व रोटी के रूप में) प्रतिदिन करना चाहिए। जौ के सेवन से कोलेस्ट्रोल के निष्कासन में सहायता मिलती है।

एक कप लौकी के ताजे जूस में ५ तुलसी के पत्ते, ५ दखनी मिर्च (पिसी) नित्य सेवन करें।

अर्जुन छाल का पाउडर दो चम्मच लेकर उसका काढ़ा बनाकर पिएँ। यह हृदय को मजबूत बनाता है।

दालचीनी का पाउडर आधा चम्मच दही के साथ खाने से कोलेस्ट्रोल कम होता है। निर्धारित मात्रा में नियासिन का सेवन करें। नियासिन के सेवन से लीवर द्वारा कोलेस्ट्रोल के अधिक उत्पादन पर नियंत्रण होता है। नियासिन हमारे शरीर में प्रोटीन, वसा तथा कार्बोज के चयापचयन में सहायता करता है। यह ऊर्जा से स्रोतों को स्थाई ऊर्जा में बदलता है तथा ग्लूकोस व वसा का अभिपोषण करता है। साबुत अनाज नियासिन के अच्छे स्रोत हैं। आलू, कड़े छिलके वाले फल, कुछ हरी पत्तेदार सब्जियों में भी नियासिन अच्छी मात्रा में मिलता है। खमीर उठाकर यह ५० प्रतिशत बढ़ाया जा सकता है।

प्राकृतिक चिकित्सा : प्राकृतिक चिकित्सा के उपचारों से शरीर में एकत्रित अतिरिक्त कोलेस्ट्रोल के निष्कासन में बहुत सहायता मिलती है। जैसे मिट्टी पट्टी (पेट माथा) गुनगुने पानी का एनिमा प्रतिदिन एक बार। सर्वांग मालिश व भाप स्नान, धूप स्नान, चादर लपेट, पेट छाती की लपेट आदि उपचार लाभप्रद होते हैं। इसके पश्चात फलाहार, रसाहार व उपवास करने से कोलेस्ट्रोल नियंत्रित

शेष पृष्ठ 11 पर

नहीं संभले तो कम पड़ जाएगी धरती

✍ रश्मि अग्रवाल

मेरी चिन्ता इसी विषय को लेकर है कि अगर हम व आप अब भी नहीं संभले या जागरूक होकर प्रकृति से आत्मसात नहीं किया व उसकी भाषा को नहीं समझ पाये तब क्या पर्यावरण के अच्छे दिन आएँगे? क्योंकि पर्यावरण दिवस ने कुछ बिन्दुओं पर चेतावनी दी है कि मनुष्य के दिन–प्रतिदिन होने वाले प्राकृतिक संसाधन आज कैसी विषम परिस्थिति में हमसे कुछ कह रहे हैं जैसे–

जल : ❖ ०.३ प्रतिशत से भी कम जल पीने योग्य है, विश्व में। इसमें २.५ फीसदी अंटार्टिका, आर्कटिका में बर्फ और ग्लेशियर के रूप में है।

❖ आज भी एक अरब से अधिक लोगों को पीने का पानी उपलब्ध नहीं है।

❖ २०३० तक वैश्विक स्तर पर पानी की माँग आपूर्ति की अपेक्षा ४० फीसदी अधिक हो जाएगी।

खाद्य : ❖ १.३ अरब टन खाद्य प्रतिवर्ष व्यर्थ हो जाता है। विश्वभर में आवश्यकता से अधिक खाने की आदत के कारण स्वास्थ्य और पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है।

❖ विश्व की कुल ऊर्जा खपत में खाद्य क्षेत्र की भागी– दारी ३० फीसदी है। साथ ही कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में इसकी भागीदारी २२ प्रतिशत है।

ऊर्जा : ❖ १.२ अरब से अधिक लोग विश्व में ऐसे हैं जिन्हीं बिजली प्राप्त नहीं है।

❖ १९६० से २०१० तक के बीच ऊर्जा दक्षता में प्रगति होने से वैश्विक ऊर्जा माँग में २५: कमी दर्ज की गई है।

खनिज : ❖ ६० अरब टन प्रतिवर्ष हो चुका है खनिज पदार्थों का विश्व भर में दोहन।

❖ विकसित देशों की खपत को मानक मानें तो २०५० तक दोहन १४० अरब टन वार्षिक हो सकता है।

धरती : ❖ ५० प्रतिशत कृषि में भूमि और ७० फीसदी जल का उपयोग विश्व में होता है, जो जनसंख्या घटने–बढ़ने से कम या ज्यादा भी हो सकता है।

❖ भूमि की उपलब्धता में कमी, उर्वरकता में कमी, खाद्य आपूर्ति को प्रभावित करेंगे।

❖ शहरों में रहने वालों की संख्या में २०१० तक ५० प्रतिशत तक थी। यह आज के परिवेश को देखते हुए अनुमान के हिसाब से २०५० तक ७० फीसदी हो जाएगी। इसलिए कृषि भूमि और मृदा का क्षेत्रफल घट जाएगा यानि मनुष्य के रहने हेतु धरमी कम पड़ जाएगी।

उपरोक्त के अतिरिक्त और भी कुछ ऐसे तथ्य हैं, जिनसे परिचित होना अनिवार्य है, जैसे–

❖ सीसा (लेड) से प्रत्येक वर्ष एक लाख पक्षियों की मृत्यु हो जाती है। यह जानकारी ब्रिटेन की ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के अध्ययन से सामने आई है। बंदूक चलाने पर गोली के धुएँ व औद्योगिक कचरे में भारी मात्रा में सीसा वाले दूषित जल से ये जाने गंवा बैठते हैं।

❖ अमेरिकी वैज्ञानिकों के शोध ा के अनुसार ६० प्रतिशत समुद्री पक्षी किसी न किसी तरह का प्लास्टिक खा रहे हैं। १९६० में पाँच फीसदी से कम समुद्री पक्षियों के पेट में प्लास्टिक पाया गया, वहीं वर्ष २०१० तक ये मात्रा ८० फीसदी और २०१५ में ६० फीसदी तक पहुँच गई है। अगर यही दशा बनी रही तो अनुमान के अनुसार २०५० तक ९९ फीसदी के पेट में जानलेवा प्लास्टिक होगी।

❖ सूरज पर उठने वाली सौर लपटों को लेकर एक नया खतरा सामने आया है। ताजा शोध में कहा गया है कि सूर्य पर इतनी ताकतवर लपटें (सुपरफ्लेयर) भी उठ सकती हैं जिनसे धरती पर विद्युत और संचार व्यवस्था बुरी तरह बाधित हो जाएगी।

❖ (टेरी) द्वारा सर्वेक्षण में यह बात सामने आई है कि सात प्रमुख नदियों–दिल्ली में यमुना सहित कटक में महानदी, डिब्रूगढ़ (असम) में ब्रह्मपुत्र, जबलपुर (मध्य प्रदेश) में नर्मदा, सूरत (गुजरात) में ताप्ती, वाराणसी में गंगा और विजयवाड़ा में कृष्णा नदी शामिल हैं। जिनकी गुणवत्ता पर ४६ फीसदी लोग विश्वास नहीं करते कि उनका पानी पीने योग्य है।

❖ परम्परागत बायों से खाना पकाने के कारण प्रत्येक नर्म देश में पाँच लाख से नौ लाख लोगों की मृत्यु होती है। ६० फीसदी महिला व बच्चे इस ईंधन से घरों के प्रदूषण की चपेट में आते हैं। शेष पृष्ठ 11 पर

विश्व का सबसे प्राचीन एवं वैज्ञानिक सम्वत्

भारतीय नव वर्ष प्रतिपदा

✍ सुरेन्द्र सिंह 'सूर्या'

धार्मिक, ऐतिहासिक और कालक्रम के रिकार्ड हेतु प्रत्येक सभ्यता का अपना तिथि पत्र (कलैण्डर) होता है। तिथि पत्र का आरम्भ किसी सम्वत् से होता है जो किसी न किसी महत्वपूर्ण घटना से जुड़ा होता है। हिन्दुओं में अधिकतर कलि, विक्रम व शालिवाहन सम्वतों का आरम्भ चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। क्योंकि चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को ही ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया।

चैत्रमासे जगत् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रं तु तदा सूर्योदये सति।। (ब्रह्मपुराण)

इसलिये हमारा सबसे प्राचीन सम्वत् सृष्टि सम्वत् है और उसका प्रथम दिन सृष्टि का जन्मदिन भी है।

युग संकल्पना : सृष्टि के निर्माण से लेकर वर्तमान तक की लम्बी कालगणना को हमारे विद्वानों ने विभिन्न युगों में विभाजन किया है और यह विभाजन भी खगोल विज्ञान पर आधारित है। कलि, द्वापर, त्रेता व सत–से चार मूलभूत युग हैं। अवधि में– **कलियुग, द्वापर युग, त्रेता युग, सत युग**

महायुग- इन चार युगों के कुल समय अर्थात् ४३,२०,००० वर्ष का एक महायुग (चतुर्युग) होता है।

मन्वन्तर- एक मन्वन्तर में ३०,८४,४८, ००० वर्ष होते हैं (७१ महायुग+१ सत युग)।

कल्प- एक कल्प में ४३२,००,००० वर्ष (१४ मन्वन्तर+१ सत युग) या १००० महायुग होते हैं। यह समय लगभग सृष्टि की आयु के बराबर है। दो कल्प मिलाकर ब्रह्मा की आयु का दिन–रात मिलाकर एक दिन होता है।

सृष्टि सम्वत् (सृष्टि की आयु)- इस वर्ष यह वर्ष प्रतिपदा २९ मार्च, २०१७ से प्रारम्भ हो रहा है। सृष्टि सम्वत् के अनुसार ब्रह्मा के दिन के द्वितीय परार्ध (श्रेतवराह कल्प) के सातवें मन्वन्तर (वैवस्वत) का २८ वाँ कलियुग चल रहा है।

इस कल्प में बीता हुआ समय इस प्रकार है–

६ मन्वन्तर के १,८५,०६,८८,००० वर्ष।

सातवें मन्वन्तर के २७ महायुग के ११,६६,४०,००० वर्ष।

२८ वें महायुग के द्वापर तक ३८,८८,००० वर्ष एवं कलियुग के ५,११५ वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इस प्रकार सृष्टि के जन्म कुल १,९७,१२,२१,११५ वर्ष पूर्ण हुए हैं। अतः २०१७ ई. का वर्ष प्रतिपदा सृष्टि सम्वत का १९७,१२,२१,११९ वाँ वर्ष है।

भारत का राष्ट्रीय पर्व : अत्यंत प्राचीनकाल से लेकर आज तक भारत भूमि पर राष्ट्रोत्थान के जितने भी महान् कार्य हुए उनका प्रारम्भ भी इसी दिन हुआ इसलिये यह दिन अर्थात् वर्ष प्रतिपदा भारत का राष्ट्रीय पर्व है। विदेशी एवं राक्षसी शक्तियों को पराजित करने वाले भारत राष्ट्र के नायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का राज्याभिषेक वर्ष प्रतिपदा के दिन ही हुआ था। अधर्म पर धर्म का वर्चस्व स्थापित करने वाले सम्राट युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। २०७४ वर्ष पूर्व शकों ने सिन्धु नदी को पार करके समस्त उत्तर भारत को रौंद डाला। शक सेना अवन्ति तक जा पहुँची शेष पृष्ठ 11 पर

हिन्दी विरोध की खोखली राजनीति

भारत अद्वितीय राष्ट्र है। सारी दुनिया में बेजोड़। इन्द्रधनुषी विविधता। फिर भी एक सांस्कृतिक निरन्तरता। यह विश्व का सबसे बड़ा संसदीय जनतन्त्र है, लकिन राजभाषा के प्रश्न पर हम सभी देशों से पीछे हैं। महात्मा गांधी ने लिखा था, पृथ्वी पर हिन्दुस्तान ही एक ऐसा देश है जहाँ माता–पिता बच्चों को अपनी मातृभाषा के बजाय अंग्रेजी पढ़ाना–लिखाना पसन्द करेंगे। संविधान सभा ने १४ सितम्बर, १९४९ को हिन्दी को राजभाषा बनाया। पं. नेहरू ने कहा, हमने अंग्रेजी इस कारण स्वीकार की कि वह विजेता की भाषा थी। अंग्रेजी कितनी ही अच्छी हो, किन्तु इसे हम सहन नहीं कर सकते। सभा में राजभाषा का प्रस्ताव एनजी आयंगर ने रखा और कहा कि हम अंग्रेजी को एकदम नहीं छोड़ सकते। हमने सरकारी प्रयोजनों के लिए हिन्दी को अभिज्ञात किया है। फिर भी मानना चाहिए वह समुन्नत भाषा नहीं है। हिन्दी राजभाषा बनी। १५ साल तक अंग्रेजी चलाने का भी प्रावधान बना। हिन्दी समृद्धि की जिम्मेदारी अनुच्छेद ३५१ के तहत केन्द्र पर डाली गयी। तब से ६० वर्ष हो गये। दक्षिण की राजनीति में राजभाषा हिन्दी का विरोध जारी है। ये राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मसौदे के त्रिभाषा सूत्र को हिन्दी थोपना बता रहे हैं। केन्द्र के सकारात्मक आश्वासन के बावजूद केन्द्र सरकार के कार्यालयों के हिन्दी नाम पट्ट पोते जा रहे हैं। वे विवेकपूर्ण विमर्श को तैयार नहीं है।

भाषा प्रसार का इतिहास ध्यान देने योग्य है। मध्यकाल के अधिकांश बादशाह फारसी थोपना चाहते थे, लेकिन अरबी–फारसी के विद्वान भारत की भाषाई पहचान के लिए हिन्दी शब्द ही प्रयोग करते थे। हिन्दी की महफिल में फारसी और अरबी के शब्द याराना ढंग से मिलते रहे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्ताधर्ता अंग्रेजी भाषी थे। कम्पनी के निदेशक मण्डल ने एक पत्रक में अपना इरादा बदला और कहा कि प्रयुक्त भाषा को वादी–प्रतिवादी वकील तथा सामान्य जन भी जानें। ऐसी भाषा हिन्दी थी। यही तमिलनाडु तथा मद्रास प्रेसीडेंसी था। १९३७ में सी. राजगोपालाचारी के नेतृत्व वाली मद्रास सरकार ने हिन्दी पढ़ाने का आदेश दिया था। आन्दोलन हुआ तो आदेश वापस लिया गया, लकिन हिन्दी की आवश्यकता जताई गयी। कोई भी भारतीय भाषा थोपी नहीं गयी। अगंग्रेज सत्ताधीशों ने अंग्रेजी को ही तरह से थोपा। भारतीय भाषाएँ बोलने वाले अपमानित हुए। ताजे हिन्दी विरोध का मूल स्वर अंग्रेजी है। तमिल की स्वीकार्यता स्वाभाविक है। वह भारतीय है, लेकिन अंग्रेजी की पक्षधरता अस्वाभाविक होने के साथ ही साम्राज्यवादी खण्डहरों की शव उपासना है।

भाषाएँ थोपने से लोक स्वीकृति नहीं पाती। उपयोगिता के कारण ही हिन्दी का क्षेत्र लगातार बढ़ा है। भारत में सौ करोड़ से ज्यादा हिन्दी भाषी हैं। काम चलाऊ हिन्दी बोलने वालों की संख्या लगभग ढाई करोड है। पाकिस्तान, बांग्लादेश, दुबई, सऊदी अरब, ओमान, फिजी, म्यांमार, रूस, कतर, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका और पड़ोसी नेपाल में लाखों हिन्दी भाषी हैं। हिन्दी प्रसार का कारण उपयोगिता है। बेंगलुरू आईटी का गढ है। बेंगलुरू सहित पूरा कर्नाटक हिन्दी भाषी युवाओं से भरा है। तमिलनाडु की नई पीढ़ी में भाषा को लेकर कमोवेश द्वन्द्व नहीं है। हिन्दी सिनेमा और धारावाहिक सर्वत्र लोकप्रिय हैं। उत्तर भारत में दक्षिण भारतीय फिल्मों के करोड़ों दर्शक हैं। बाहुबली ने हिन्दी में अरबों रूपये कमाये थे, लकिन राष्ट्रीय भावना को न समझने वाले दल हिन्दी थोपने का शोर मचाकर राजनीति चमकाते हैं। २०१७ में भी बेंगलुरू और तमिलनाडु के राष्ट्रीय राजमार्गों से हिन्दी

नाम पट्ट हटाने का आन्दोलन चला था। आरोप था कि भाजपा के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार तमिल भावनाओं का सम्मान नहीं करती। तमिलनाडु भारतीय संस्कृति दर्शन का क्षेत्र रहा है। भारत में तमिल भावना का सम्मन है। अंग्रेजी की वरीयता तमिल भावनाओं से संगत नहीं है।

तमिल साहित्य में संस्कृति का दर्शन है। सुब्रह्मण्यम भारतीय प्रख्यात तमिल साहित्यकार व चिन्तक थे। अंग्रेजी को सभी भारतीय भाषाओं से श्रेष्ठ बताते थे। भारती ने लिखा, तमिल में ऐसा जीवन्त काव्य और दार्शनिक साहित्य है जो इंग्लैण्ड की षा से कहीं अधिक भव्य है। भारतीय साहित्य की श्रेष्ठता पर जोर देते हुए भारती ने लिखा, मैं नहीं समझता कि यूरोप की कोई भाषा तिरूवल्लुवर के कुरल कंवन की रामायण और इलंगी की शलप्पतिहारम जैसी रचनाओं जितना गर्व कर सकती है। तमिल चिन्तक भारती अंग्रेजी से टकरा रहे थे, लेकिन तमिल राजनीति अपनी ही राजभाषा हिन्दी के विरोध में अंग्रेजी की अंगरक्षक बन रही है। अभी राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर बहस जारी है। भारती के समय भी यह बहस थी। उन्होंने लिखा थाि क राष्ट्रीय शिक्षा का आधारभूत सिद्धान्त है– पाठ्यक्रम में राष्ट्रभाषा को प्रमुखता प्रदान करना। भारती सांस्कृतिक दिग्गज थे। हिन्दी जानते थे। १९०८ में उन्होंने तिलक को पत्र लिखा, मुझे पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा की चिट्ठी मिली है। कहा गया है कि हम मद्रास में चेन्नै जनसंगम के सौजन्य से हिन्दी की कक्षा खोलें। हमने पहले से ही ऐसी कक्षा खोल रखी है। उम्मीद है कि भविष्य में हिन्दी सीखने वालों की संख्या बढ़ेगी।

भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल मंत्र घोषित किया था कि इतिहास ही नहीं, अपितु सभी विषय राष्ट्रभाषा में पढ़ाये जाने चाहिए। राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा के माध्यम वाली शिक्षा को राष्ट्रीय कहना क्या पूर्ण रूप से अनुचित नहीं होगा? हिन्दी प्रसार तमिल क्षेत्र की जरूरत रहा है। १९१८ में महात्मा गान्धी ने भी दक्षिणी राज्यों में हिन्दी प्रसार के लिए दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति बनायी थी। समिति के महासचिव एस. जयराम के अनुसार हिन्दी सीखने वालों की संख्या दोगुनी से ज्यादा बढ़ी है। २००६ में ५.८० लाख। इस वर्ष यह संख्या छह लाख हो सकती है। आँकड़ों के अनुसार इसमें तमिलनाडु प्रथम है। तेलंगाना सहित आन्ध्र दूसरे क्रम पर है। कर्नाटक तीसरा है और केरल चौथा है। उद्योग व्यापार की जरूरतों, कला और संस्कृति आदि कारणों से हिन्दी का प्रसार बढ़ा है।

भाषाएँ संस्कृति को प्रभावित करती हैं, संस्कृति व दर्शन से प्रभावित भी होती हैं। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से सारी भारतीय भाषाएँ एक जैसी हैं। तमिल कवि कंबन और संस्कृत कवि वालमिकि दोनों ने ही रामकथा लिखी है। दोनों को सांस्कृतिक मूल एक है। बेशक भारत बहुभाषिक राष्ट्र है लकिन अमेरिका विद्वान एमेन्यू ने उसे एक भाषी माना है। प्रत्येक मुख की अपनी भाषा है, लेकिन सबका अंतस एक है। तमिल, तेलुगू, कन्नड के बिना हिन्दी का श्रृंगार अधूरा और हिन्दी के बिना राष्ट्र की अभिव्यक्ति अधूरी। तमिल, कन्नड आदि से हिन्दी का बैर नहीं। हिन्दी सबको जोड़ने वाला रससूत्र है। दक्षिण में हिन्दी प्रयोग से राष्ट्रीय एकता मजबूत होगी। हिन्दी भाषी भी सजग नहीं जान पड़ते। हिन्दी की तमाम बोलियों को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांगें उठती हैं। भोजपुरी हिन्दी का ही प्रेमपूर्ण हिस्सा है। मधुरसा भोजपुरी के बिना हिन्दी रसहीन होगी। अवधी या बृजभाषी भी ऐसी ही मांग करें तो राजभाषा हिन्दी का गौरव कैसे बना रह सकता है? दक्षिण के मित्र भी विचार करें। अंग्रेजी का मोह छोड़ें। राजभाषा व अपनी भाषाओं से प्यार करें। नया भारत अपनी भाषाओं के अंगहार में ही शोभायमान होगा।

हैदराबाद में मस्जिद को गिराये जाने पर हंगामा

सियासत के अनुसार अंबर पैठ में नगर निगम द्वारा एक मस्जिद को गिराये जाने के कारण मुसलमानों ने जोरदार प्रदर्शन किया। ज्ञातव्य है कि निगम में इत्तेहादुल मुस्लिमीन सत्तारूढ है। मुसलमानों ने इस निर्णय के लिए राज्य सरकार और ओवैसी बन्धुओं की निन्दा की है। मुसलमानों की उत्तेजित भावना को देखते हुए राज्य के गृहमन्त्री महमूद अली ने वक्फ बोर्ड को यह निर्देश दिया है कि वह इस मस्जिद का पुनर्निर्माण कराये।

'बढ़ती जनसंख्या' एक अभिशाप

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

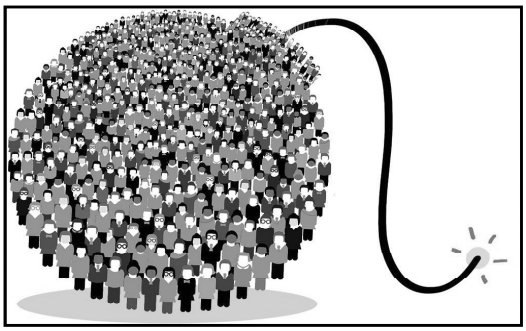

आज यह सर्वविदित है कि हमारे प्रिय देश भारत में बढ़ती जनसंख्या एक भयानक रूप ले चुकी है। जिससे देश में विभिन्न धार्मिक जनसंख्या अनुपात निरंतर असंतुलित हो रहा है। आज की बढ़ती जनसंख्या भारत के लिए अभिशाप बन चुकी है। हम अपने अस्तित्व पर आने वाले संकट के प्रति सतर्क व सावधान कब होंगे?

यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है कि जब १९४७ में पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों में मुस्लिम बहुसंख्यक हुए तो देश का विभाजन हुआ था। यह जनसंख्या बल का दुष्प्रभाव था जिससे तत्कालीन राजनीति ने विवश होकर धर्म के आधार पर देश का विभाजन किया। क्या यह अनुचित नहीं कि जहाँ–जहाँ मुस्लिम संख्या बढ़ती जाती है वहाँ–वहाँ उनके द्वारा साम्प्रदायिक दंगे भड़काने से वहाँ के मूल निवासी पलायन करने को विवश हो जाते हैं? तत्पश्चात वहाँ केवल मुस्लिम बहुल बस्तियाँ होने के कारण उनमें अनेक अलगाववादी व आतंकवादी मानसिकता पनपने लगती है।

इसके अतिरिक्त अधिकांश कट्टरवादी मुस्लिम समाज लोकतांत्रिक चुनावी व्यवस्था का अनुचित लाभ लेने के लिए अपने संख्या बल को बढ़ाने के लिए सर्वाधिक इच्छुक रहते हैं। अधिकांश मुस्लिम बस्तियों में यह नारा लिखा हुआ मिलता है कि 'जिसकी जितनी संख्या भारी सियासत में उसकी उतनी हिस्सेदारी'। जनसंख्या के सरकारी आंकड़ों से भी यह स्पष्ट होता रहा है कि हमारे देश में इस्लाम सबसे अधिक गति से बढ़ने वाला संप्रदाय/धर्म बना हुआ है। इसको 'जनसंख्या जिहाद' कहा जाये तो अनुचित न होगा क्योंकि इसके पीछे इनका छिपा हुआ मुख्य ध्येय है कि हमारे ध र्मनिरपेक्ष देश का इस्लामीकरण किया जाये। निस्संदेह विभिन्न मुस्लिम देश टर्की, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, मिस्र, सीरिया, ईरान, यू.ए.ई., सऊदी अरब व बंगलादेश आदि ने भी कुरान, हदीस, शरीयत आदि के कठोर रूढ़िवादी नियमों के उपरांत भी अपने–अपने देशों में जनसंख्या वृद्धि दर कम करी है। बढ़ती हुई जनसंख्या संसाधनों को खा रही है। औद्योगिकीकरण होने के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है व बढ़ती आवश्यक वस्तुओं की माँग पूरी करने के लिए मिलावट की जा रही है। जिससे स्वास्थ्य सम्बन्धी र समस्याएँ बढ़ रही हैं। इसके अतिरिक्त वायु प्रदूषण, कूड़े–करकट के जलने पर धुआं, प्रदूषित जल व खाद्य–पदार्थ, घटते वन व चारागाह, पशु–पक्षियों का संकट, गिरता जलस्तर व सूखती नदियाँ, कुपोषण व भयंकर बीमारियाँ, छोटे–छोटे झगड़े, अतिक्रमण, लूटमार, हिंसा, अराजकता, नक्सलवाद व आतंकवाद इत्यादि अनेक मानवीय आपदाओं ने भारत भूमि को विस्फोटक बना दिया है। फिर भी जनसंख्या में बढ़ोत्तरी की गति को सीमित करने के लिए सभी नागरिकों के लिए कोई एक समान नीति नहीं है। उपरोक्त वृद्धि के अतिरिक्त बंगलादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और म्यांमार आदि से निरंतर आने वाले घुसपैठिये व अवैध व्यक्तियों की संख्या भी लगभग ७ करोड़ होने से एक और गंभीर समस्या हमको चुनौती दे रही है।

सम्पूर्ण विश्व के १४६ करोड़ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में भारत का क्षेत्र मात्र २.४ प्रतिशत है जबकि हमारी पुण्य भूमि पर विश्व की कुल जनसंख्या लगभग ७.५ अरब का १७.६ प्रतिशत बोझ है। आज हमारे राष्ट्र की कुल जनसंख्या १३४ करोड़ से अधिक हो चुकी है और चीन की लगभग १३८ करोड़ जनसंख्या के बराबर होने की ओर बढ़ रही है। जबकि पृथ्वी पर चीन का क्षेत्रफल हमसे लगभग ३ गुना अधिक है। इस प्रकार हम ४०२ व्यक्तियों का बोझ प्रति वर्ग किलोमीटर वहन करते हैं जबकि चीन में उतने स्थान पर केवल १४४ व्यक्ति ही रहते हैं। इसी प्रकार पाकिस्तान में २६०, नेपाल में १६६, मलेशिया में ६७, श्रीलंका में ३२३ एवं तुर्की में मात्र ६७ व्यक्तियों का प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में पालन हो रहा है। हम से ढाई गुना बड़े क्षेत्रफल वाले ऑस्ट्रेलिया की जनसंख्या जितनी ही संख्या प्रतिवर्ष हमारे देश में बढ़ रही है। अतः भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को शांति, स्वस्थ व सुरक्षित जीवन के साथ–साथ सामाजिक सद्भाव एवं सम्मानित जीवन जी सके इसलिए हम सब राष्ट्रवादी चिंतित हो रहे हैं। इन चिंताओं के निवारण व देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को बचाये रखने के लिए आज की प्रमुख आवश्यकता है कि सभी नागरिकों के लिए एक समान 'जनसंख्या नियंत्रण कानून' बनना चाहिए।

हिन्दुस्थान और हिन्दुओं की प्रतिष्ठा ''लिंच'' करने का प्रयास

संयुक्त राष्ट्र संघ में दक्षिण अफ्रीका के एक वामपंथी संगठन ''सैंटर फॉर अफ्रीकन डेवलपमेंट एंड प्रोगैस'' ने भारत में बढ़ रही मॉब लिचिंग (भीड़ हिंसा या भीड़ द्वारा हत्या) का मामला उठाया है। संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार परिषद् में यह मामला रखते हुए सेंटर के पॉल न्यूमैन ने कहा कि झारखंड के सरायकेला में तबरेज हुसैन नामक व्यक्ति भीड़ हिंसा में मारा गया और यह भारत में बढ़ती मुस्लिम विरोधी हिंसा का प्रमाण है।

दक्षिण अफ्रीका नक्सलीय हिंसा, जिसमें गोरे लोग मिलकर किसी काले व्यक्ति को मार डालते हैं, अथवा इसका उलटा होता है, के लिए कुख्यात है। इसकी चर्चा पूरे विश्व में होती रहती है। अमरीका भी इसी प्रकार की हिंसा के लिए बदनाम है। भारत इस कारण अफ्रीका, अमेरिका का आलोचक रहा है। अब भारत को मुस्लिम विरोधी लिचिंग के लिए बदनाम करने का मौका मिलने पर वहाँ के कुछ लोग बड़े खुश हो रहे होंगे।

किन्तु भारत में भीड़ हिंसा क्या केवल मुस्लिम विरोधी है? आंकड़े और सच्चाई तो कुछ और ही बात कहते हैं। बंगाल और केरल में इसके शिकार बनने वाले लोगों में मुख्यतः हिन्दू ही हैं। किन्तु हिन्दू विरोधी हिंसा मीडिया में उस तरह का प्रचार नहीं पाती, जैसी मुस्लिम विरोधी घटनाएँ। मोहम्मद अखलाक के घर से बछड़े का मांस पकड़ा जाता है और वो लगातार झूठ बोलकर इस बात को नकारता है। तब उत्तेजित भीड़ के हाथों वह मारा जाता है। इस घटना को भयंकर प्रचार मिलता है। राहुल गाँधी से लेकर केजरीवाल तक अखलाक के घर जाकर उसके परिवार पर पैसों की बारिश करते हैं। चार फ्लैट तथा लगभग १ करोड़ रुपया नकद दिया जाता है। इस घटना के कुछ मास बाद आगरा में कैलाश माहौर को पूरी प्लानिंग कर और एक दिन पहले चुनौतीपूर्ण घोषणा कर कत्ल किया जाता है। माहौर के घर को संभालने वाला कोई व्यस्क उनके पीछे नहीं था। अखलाक के बाद तो उसके चार–चार व्यस्क बेटे सभी सर्विस में लगे थे। कोई आर्थिक रूप से विपन्नता नहीं थी। माहौर की मौत के बाद परिवार बर्बादी के कगार पर पहुँचा। किन्तु माहौर के परिजनों को अखलाक के कुल डेढ़ करोड़ के मुकाबले दस गुना कम–महज १५ लाख रुपये अखिलेश सरकार ने दिये। और जहाँ तक प्रचार का प्रश्न है, मीडिया ने माहौर के मामले में १० प्रतिशत भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। ऐसे ही कई गौभक्त मुस्लिम हिंसा के शिकार बने। मीडिया में कहीं कुछ खास जिक्र नहीं।

पीलू खान और पहलूखान भी गौहत्या या गोमांस के कारण मारे गये। यानी अपराध का शक उन पर हमले का कारण बना। पर ध्रुव त्यागी अपनी बेटी छेड़े जाने का विरोध करने पर मारे गये, अंकित सक्सैना मुस्लिम लड़की से प्यार करने के कारण, चंदन गुप्ता गणतंत्र दिवस पर तिरंगा यात्रा निकालने के कारण, डॉ. नारंग क्रिकेट खेलने वाले मुस्लिम लड़कों द्वारा बैट से इसलिए पीटे गये क्योंकि क्रिकेट बॉल की वजह से उनके घर के शीशे फूट गये थे और उन्होंने बॉल देने से मना कर दिया था, मथुरा के भारत यादव ने लस्सी पी जाने वाले मुस्लिम लड़कों से पैसे माँगे तो बदले में उसकी जान ले ली गई। तबरेज ने तो बाइक चोरी की थी, केरल में मधु नामक बालक ने भूख से पीड़ित होने पर होटल से दो रोटी चुराई तो मुस्लिम मालिक ने बेरहमी से पीट–पीट कर मार डाला। तबरेज हुसैन वाले झारखण्ड में आदिवासी धर्मगुरु मंगरु पाहन को अकारण ही मुस्लिम भीड़ ने कत्ल कर डाला। कहीं चर्चा भी नहीं। प्रतापगढ़ में क्रिकेट में पाकिस्तान की हार पर खुशी प्रकट करने

शेष पृष्ठ 11 पर

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् भारतीय नववर्ष विक्रमी संवत् का आगमन

विक्रमी संवत् अत्यन्त प्राचीन संवत है। साथ ही ये गणित की दृष्टि से अत्यन्त सुगम और सर्वथा ठीक हिसाब रखकर निश्चित किये गये है। किसी नवीन संवत् को चलाने की शास्त्रीय विधि यह है कि जिस नरेश को अपना संवत चलाना हो, उसे संवत चलाने के दिन से पूर्व कम–से–कम अपने पूरे राज्य में जितने भी लोग किसी के ऋणी हों, उनका ऋण अपनी ओर से चुका देना चाहिये। **विक्रम संवत्** का प्रणेता सम्राट विक्रमादित्य को माना जाता है। कालिदास इस महाराजा के एक रत्न माने जाते हैं। कहना यहीं होगा कि भारत के बाहर इस नियम का कहीं पालन नहीं हुआ। भारत में भी महापुरुषों के संवत उनके अनुयायियों ने श्रद्धावश ही चलाये लेकिन भारत का सर्वमान्य संवत **विक्रम संवत्** ही है और महाराज विक्रमादित्य ने देश के सम्पूर्ण ऋण को, चाहे वह जिस व्यक्ति का रहा हो, स्वयं देकर इसे चलाया। इस संवत के महीनों के नाम विदेशी संवतों की भाँति देवता, मनुष्य या संख्यावाचक कृत्रिम नाम नहीं हैं। यही बात तिथि तथा अंश (दिनांक) के सम्बन्ध ा में भी है, वे भी सूर्य–चन्द्र की गति पर आश्रित हैं। सारांश यह कि यह संवत अपने अंग–उपांगों के साथ पूर्णतः वैज्ञानिक सत्य पर स्थित है।

शास्त्रों व शिलालेखों में उल्लेख

विक्रम संवत् के उद्भव एवं प्रयोग के विषय में कुछ कहना कठिन है। यही बात **शक संवत्** के विषय में भी है। किसी विक्रमादित्य राजा के विषय में, जो ई. पू. ५७ में था, सन्देह प्रकट किए गए हैं। इस संवत का आरम्भ गुजरात में कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से (नवम्बर, ई. पू. ५८) और उत्तरी भारत में चैत्र कृष्ण प्रतिपदा (अप्रैल, ई. पू. ५८) से माना जाता है। बीता हुआ विक्रम वर्ष ईस्वी सन् ५७ के बराबर है। कुछ आरम्भिक शिलालेखों में ये वर्ष कृत के नाम से आये हैं।

विद्वान मतभेद

विक्रम संवत् के प्रारम्भ के विषय में भी विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ लोग ईसवी सन ७८ और कुछ लोग ईसवी सन ५४४ में इसका प्रारम्भ मानते हैं। फारसी ग्रंथ **कलितौ दिमनः** में पंचतंत्र का एक पद्य **शशिदिवाकर योर्ग्रहपीडनम्श** का भाव उद्धृत है। विद्वानों ने सामान्यतः **कृत संवत्** को **विक्रम संवत्** का पूर्ववर्ती माना है। किन्तु **कृत** शब्द के प्रयोग की व्याख्या सन्तोषजनक नहीं की जा सकी है। कुछ शिलालेखों में मावल–गण का संवत उल्लिखित है, जैसे–नरवर्मा का मन्दसौर शिलालेख। **कृत** एवं **मालव संवत्** एक ही कहे गए हैं, क्योंकि दोनों पूर्वी राजस्थान एवं पश्चिमी मालवा में प्रयोग में लाये गये हैं। कृत के २८२ एवं २९५ वर्ष तो मिलते हैं, किन्तु मालव संवत् के इतने प्राचीन शिलालेख नहीं मिलते। यह भी सम्भव है कि कृत नाम पुराना है और जब मालवों ने उसे अपना लिया तो वह **मालव-गणाम्नात** या **मालव-गण-स्थिति** के नाम से पुकारा जाने लगा। किन्तु यह कहा जा सकता है कि यदि कि **कृत** का वही अर्थ है जो **सिद्ध** का है, जैसे–**कृतान्त** का अर्थ है **सिद्धान्त** और यह संकेत करता है कि यह कुछ लोगों की सहमति से प्रतिष्ठापित हुआ है। ८वीं एवं ९वीं शती से विक्रम संवत् का नाम विशिष्ट रूप से मिलता है। संस्कृत के ज्योतिः शास्त्रीय ग्रंथों में यह **शक संवत्** से भिन्नता प्रदर्शित करने के लिए यह सामान्यतः केवल संवत नाम से प्रयोग किया गया है। **चालुक्य विक्रमादित्य षष्ठ** के **वेडरावे शिलालेख** से पता चलता है कि राजा ने **शक संवत्** के स्थान पर **चालुक्य विक्रम संवत्** चलाया, जिसका प्रथम वर्ष था– १०७६–७७ई०।

नवसंवत्सर

विक्रम संवत् २०७३ का शुभारम्भ ८ अप्रैल, सन २०१६ को चैत्र मास के शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा से है। पुराणों के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को ब्रह्मा ने सृष्टि निर्माण किया था, इसलिए इस पावन तिथि को नव संवत्सर पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। संवत्सर–चक्र के अनुसार सूर्य इस ऋतु में अपने राशि–चक्र की प्रथम राशि मेष में प्रवेश करता है। भारतवर्ष में वसंत ऋतु के अवसर पर नूतन वर्ष का आरम्भ मानना इसलिए भी हर्षोल्लासपूर्ण है, क्योंकि इस ऋतु में चारों ओर हरियाली रहती है तथा नवीन पत्र–पुष्पों द्वारा प्रकृति का नव शृंगार किया जाता है। लोग नववर्ष का स्वागत करने के लिए अपने घर–द्वार सजाते हैं तथा नवीन वस्त्राभूषण धारण करके ज्योतिषाचार्य द्वारा नूतन वर्ष का संवत्सर फल सुनते हैं। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि के दिन प्रातः काल स्नान आदि के द्वारा शुद्ध होकर हाथ में गंध, अक्षत, पुष्प और जल लेकर ओम भूर्भुवः स्वः संवत्सर–अधिपति आवाहयामि पूजयामि च इस मंत्र से नव संवत्सर की पूजा करनी चाहिए तथा नववर्ष के अशुभ फलों के निवारण हेतु ब्रह्मा जी से प्रार्थना करनी चाहिए कि **हे भगवन! आपकी कृपा से मेरा यह वर्ष कल्याणकारी हो और इस संवत्सर के मध्य में आने वाले सभी अनिष्ट और विघ्न शांत हो जाएं।** नव संवत्सर के दिन नीम के कोमल पत्तों और ऋतुकाल के पुष्पों का चूर्ण बनाकर उसमें काली मिर्च, नमक, हींग, जीरा, मिश्री, इमली और अजवायन मिलाकर खाने से रक्त विकार आदि शारीरिक रोग शांत रहते हैं और पूरे वर्ष स्वास्थ्य ठीक रहता है।

राष्ट्रीय संवत्

भारतवर्ष में इस समय देशी विदेशी मूल के अनेक संवतों का प्रचलन है, किंतु भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय राष्ट्रीय संवत् यदि कोई है तो वह **विक्रम संवत्** ही है। आज से लगभग २,०६८ वर्ष यानी ५७ ईसा पूर्व में भारतवर्ष के प्रतापी राजा विक्रमादित्य ने देशवासियों को शकों के अत्याचारी शासन से मुक्त किया था। उसी विजय की स्मृति में चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से विक्रम संवत् का भी आरम्भ हुआ था।

नये संवत् की शुरुआत

प्राचीन काल में नया संवत् चलाने से पहले विजयी राजा को अपने राज्य में रहने वाले सभी लोगों को ऋण–मुक्त करना आवश्यक होता था। राजा विक्रमादित्य ने भी इसी परम्परा का पालन करते हुए अपने राज्य में रहने वाले सभी नागरिकों का राज्यकोष से कर्ज चुकाया और उसके बाद चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मालवगण के नाम से नया संवत् चलाया। भारतीय कालगणना के अनुसार वसंत ऋतु और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि अति प्राचीन काल से सृष्टि प्रक्रिया की भी पुण्य तिथि रही है। वसंत ऋतु में आने वाले वासंतिक नवरात्र का प्रारम्भ भी सदा इसी पुण्य तिथि से होता है। विक्रमादित्य ने भारत की इन तमाम कालगणनापरक सांस्कृतिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए ही चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से ही अपने नवसंवत्सर संवत् को चलाने की परम्परा शुरू की थी और तभी से समूचा भारत इस पुण्य तिथि का प्रतिवर्ष अभिवंदन करता है। दरअसल, भारतीय परम्परा में चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य शौर्य, पराक्रम तथा प्रजाहितैषी कार्यों के लिए प्रसिद्ध माने जाते हैं। उन्होंने ९५ शक राजाओं को पराजित करके भारत को विदेशी राजाओं की दासता से मुक्त किया था। राजा विक्रमादित्य के पास एक ऐसी शक्तिशाली विशाल सेना थी, जिससे विदेशी आक्रमण–कारी सदा भयभीत रहते थे। ज्ञान–विज्ञान, साहित्य, कला संस्कृति को विक्रमादित्य ने विशेष प्रोत्साहन दिया था। धंवंतरि जैसे महान वैद्य, वराहमिहिर जैसे महान ज्योतिषी और कालिदास जैसे महान साहित्यकार विक्रमादित्य की राज्यसभा के नवरत्नों में शोभा पाते थे। प्रजावत्सल नीतियों के फलस्वरूप ही विक्रमादित्य ने अपने राज्यकोष से धन देकर दीन दुःखियों को साहूकारों के कर्ज से मुक्त किया था। एक चक्रवर्ती सम्राट होने के बाद भी विक्रमादित्य राजसी ऐश्वर्य भोग को त्यागकर भूमि पर शयन करते थे। वे अपने सुख के लिए राज्यकोष से धन नहीं लेते थे। राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान पिछले दो हजार वर्षों में अनेक देशी और विदेशी राजाओं ने अपनी साम्राज्यवादी आकांक्षाओं की तुष्टि करने तथा इस देश को राजनीतिक दृष्टि से पराधीन बनाने के प्रयोजन से अनेक

शेष पृष्ठ 11 पर

भावशुद्धि में सहायक होता है नवरात्रों का आयोजन

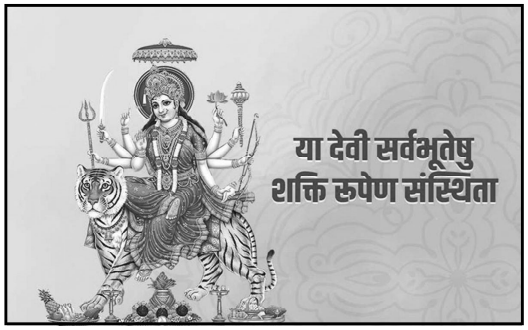

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक नवरात्रि का त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। नवरात्र में देवी माँ के व्रत रखे जाते हैं। स्थान–स्थान पर देवी माँ की मूर्तियाँ बनाकर उनकी विशेष पूजा की जाती है। घरों में भी अनेक स्थानों पर कलश स्थापना कर दुर्गा सप्तशती पाठ आदि होते हैं। नारीसेमरी में देवी माँ की जोत के लिए श्रद्धालु आते हैं और पूरे नवरात्र के दिनों में भारी मेला रहता है। नवरात्र चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक यह व्रत किए जाते हैं। भगवती के नौ प्रमुख रूप (अवतार) हैं तथा प्रत्येक बार ९–९ दिन ही ये विशिष्ट पूजाएँ की जाती हैं। इस काल को नवरात्र कहा जाता है। वर्ष में दो बार भगवती भवानी की विशेष पूजा की जाती है। इनमें एक नवरात्र तो चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक होते हैं और दूसरे श्राद्धपक्ष के दूसरे दिन आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से आश्विन शुक्ल नवमी तक। इस व्रत में नौ दिन तक भगवती दुर्गा का पूजन, दुर्गा सप्तशती का पाठ तथा एक समय भोजन का व्रत धारण किया जाता है। प्रतिपदा के दिन प्रातः स्नानादि करके संकल्प करें तथा स्वयं या पंडित के द्वारा मिट्टी की वेदी बनाकर जौ बोने चाहिए। उसी पर घट स्थापना करें। फिर घट के ऊपर कुलदेवी की प्रतिमा स्थापित कर उसका पूजन करें तथा 'दुर्गा सप्तशती' का पाठ कराएँ। पाठ–पूजन के समय अखण्ड दीप जलता रहना चाहिए। वैष्णव लोग राम की मूर्ति स्थापित कर रामायण का पाठ करते हैं। दुर्गा अष्टमी तथा नवमी को भगवती दुर्गा देवी की पूर्ण आहुति दी जाती है। नैवेद्य, चना, हलवा, खीर आदि से भोग लगाकर कन्या तथा छोटे बच्चों को भोजन कराना चाहिए। नवरात्र ही शक्ति पूजा का समय है, इसलिए नवरात्र में इन शक्तियों की पूजा करनी चाहिए।

नवरात्र या नवरात्रि : संस्कृत व्याकरण के अनुसार नवरात्रि कहना त्रुटिपूर्ण है। नौ रात्रियों का समाहार, समूह होने के कारण से द्वन्द्व समास होने के कारण यह शब्द पुल्लिंग रूप 'नवरात्र' में ही शुद्ध है।

नवरात्र क्या है? : पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा के काल में एक साल की चार संधियाँ हैं। उनमें मार्च व सितंबर माह में पड़ने वाली गोल संधियों में साल के दो मुख्य नवरात्र पड़ते हैं। इस समय रोगाणु आक्रमण की सर्वाधिक संभावना होती है। ऋतु संधियों में अक्सर शारीरिक बीमारियाँ बढ़ती हैं, अतः उस समय स्वस्थ रहने के लिए शरीर को शुद्ध रखने के लिए और तन–मन को निर्मल और पूर्णतः स्वस्थ रखने के लिए की जाने वाली प्रक्रिया का नाम 'नवरात्र' है।

नौ दिन या रात : अमावस्या की रात से अष्टमी तक या पड़वा से नवमी की दोपहर तक व्रत नियम चलने से नौ रात यानी 'नवरात्र' नाम सार्थक है। यहाँ रात गिनते हैं, इसलिए नवरात्र यानि नौ रातों का समूह कहा जाता है। रूपक के द्वारा हमारे शरीर को नौ मुख्य द्वारों वाला कहा गया है। इसके भीतर निवास करने वाली जीवनी शक्ति का नाम ही दुर्गा देवी है। इन मुख्य इन्द्रियों के अनुशासन, स्वच्छता, तारतम्य स्थापित करने के प्रतीक रूप में शरीर तंत्र को पूरे साल के लिए सुचारू रूप से क्रियाशील रखने के लिए नौ द्वारों के शुद्धि का पर्व नौ दिन मनाया जाता है। इनको व्यक्तिगत रूप से महत्व देने के लिए नौ दिन नौ दुर्गाओं के लिए कहे जाते हैं। शरीर को सुचारू रखने के लिए विरेचन, सफाई या शुद्धि प्रतिदिन तो हम करते ही हैं किन्तु अंग–प्रत्यंगों की पूरी तरह से भीतरी सफाई अभियान चलाया जाता है। सात्विक आहार के व्रत का पालन करने से शरीर की शुद्धि, साफ–सुथरे शरीर से शुद्ध कर्म, कर्मों से सच्चरित्रता और क्रमशः मन शुद्ध होता है। स्वच्छ मन मंदिर में ही तो ईश्वर की शक्ति का स्थायी निवास होता है।

नवरात्रि के हर दिन का महत्त्व

देवी माँ की अनन्य भक्ति के नौ दिन, नवरात्र की महिमा अपने आप में अनूठी है। कहते हैं इस नौ दिनों मां अपने भक्तों की हर मनोकामना को पूरा करती है। पूरे देश में नवरात्रि का ये त्यौहार पूरे उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इन नौ दिन मां के नौ रूप भक्तों के सभी कष्टों को दूर करें उनके जीवन में सुख, समृद्धि और सौभागय का संचार करते हैं। नवरात्रि के हर दिन का महत्व, अलग विशेषता और महिमा होती है। आइए जानते हैं नवरात्रि के हर दिन का महत्त्व है।

मां शैलपुत्री : नवरात्रि के पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा की जाती है। मां शैलपुत्री को देवी पार्वती के नाम से भी संबोधित किया जाता है। मां दुर्गा के इस स्वरूप को समस्त आपदाओं का नाशक माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि मां शैलपुत्री की पूजा करने से व्याधि और आपदाएं दूर होती हैं।

मां ब्रह्मचारिणी : मां का ये रूप जो ब्रह्म अर्थात तपस्या का आचरण करता है, उसे ब्रह्मचारिणी कहा जाता है। दाहिने हाथ में जप की माला और बाएं हाथ में कमंडल लिए मां के इस रूप की पूजा करने से कुण्डलिनी जाग्रत होती है और दुर्भावों का नाश होता है।

मां चंद्रघंटा : नवरात्रि के तीसरे दिन मां चंद्रघंटा की पूजा की जाती है। इस रूप में मां की दस भुजाएं हैं और सर पर आधा चंद्रमा भी सुशोीित है। मां के इस रूप की आराधना करने से भक्त साधना में प्रवीण हो जाता है।

मां कृष्माण्डा : नवरात्रि के चौथे दिन मां कूष्माण्डा की पूजा की जाती है। मां के इस स्वरूप को सृष्टि की जननी माना जाता है। मां क` इस रूप की आठ भुजाएं हैं इसलिए इन्हें अष्टभुजा देवी भी कहा जाता है। मां के इस रूप की अर्चना करने से यश, आयु बढ़ती है और सभी रोग दूर होते हैं।

मां कालरात्रि : मां का ये रूप सभी प्रकार के भय से मुक्ति दिलवाता है। कालरात्रि स्वरूप में मां के बाल बिखरे हुए हैं, उन्होंने श्याम वर्ण धारण किया हे, क्रोध उनका श्रृंगार कर रहा है। मां का ये रूप बहुत ही शुभ है और अपने भक्तों के लिए भी सब शुभ ही करता है।

मां महागौरी : मां का ये रूप सौभाग्य का सूचक है। भगवान शिव के लिए कठोर तप करने के कारण देवी का ये रूप काले रंग का हो गया था जिसे भगवान शिव ने गंगा जल से धोया था और फिर मां को गौण वर्ण और गौरी नाम प्राप्त हुआ। सिंह और बैल मां के वाहन हैं। सुहागन स्त्रियां अपने सुहाग की लंबी उम्र की कामना के साथ मां को चुनरी भेंट करती हैं।

मां सिद्धिदात्री : मां का ये रूप सिद्धि प्रदान करने वाला है। और मां के इस रूप की साधना करने से सभी सिद्धियों की प्राप्ति होती है। मां के इस रूप की उपासना करने से सभी भौतिक और आध्यात्मिक सुखों की प्राप्ति होती है।

देवी मां के नौ रूपों की अलग महिमा है। ऐसा कहा जाता है कि त्रिदेवों ने मिलकर नवदुर्गा का सृजन किया था। इसलिए जब नवरात्रि में देवी के नौरूपों की आरती और पूजन किया जाता है।

ये हैं नवरात्रि के हर दिन का महत्वः– तो तीनों देवों की आरती स्वयं ही हो जाती है। ये नवरात्रि आपको भी शुभ फल देने वाले हो, यही हमारी शुभकामना है।

मां स्कन्दमाता : असुरों का संहार करने शेष पृष्ठ 10 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

ईसाई धर्म प्रचारकों का कुचक्रः सावधान हिन्दू समाज

- ईसाई धर्म प्रचारक श्रमिकों, अशिक्षितों और वंचित समाज को अपना शिकार बनाते हैं।
- शुरू में, इन्हें आश्वासन दिया जाता है कि, यदि आप हमारी प्रार्थना सभाओं में आयेंगे तो आपके कष्ट दूर हो जायेंगे।
- जब प्रलोभन में व्यक्ति इनकी प्रार्थना सभाओं में जाने लगता है तो, उसे अपना साहित्य देते हैं।
- धीरे–धीरे घर से देवी–देवताओं की मूर्ति और चित्र हटाने को कहते हैं, भोले–भाले व्यक्ति को यह पता भी नहीं चलता कि, उसका धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।
- महिलाओं से कहा जाता है कि, आपके सुहाग के प्रतीक आपको कष्ट पहुंचा रहे हैं, इनका परित्याग करो।
- व्यक्ति धोखे में आ जाता है और फिर किसी चर्च में ले जाकर ईसाई बना दिया जाता है।

हम क्या करें?

- हिन्दू संगठनों को चाहिये कि, प्रत्येक मन्दिर में सप्ताह में कम से कम एक बार कीर्तन और प्रार्थना सभा हो। श्रमिकों, वंचितों और निर्धनों को अधिक से अधिक सम्मिलित किया जाये।
- जहां भी ईसाई मिशनरियों अवैधानिक रूप से धर्मान्तरण करा रही हों, उसकी सूचना प्रशासन को तुरन्त दें।
- हिन्दुत्व का प्रचार करने के लिये प्रत्येक जागरूक हिन्दू को आगे आना होगा। यह कार्य मानवता की रक्षा का कार्य है। किसी का धर्मान्तरण करना सबसे बड़ा मानवाधिकार हनन है।
- श्रमिकों, वंचितों और कृषकों के मध्य वैदिक शिक्षाओं का प्रचार युद्ध स्तर पर हो। आर्य समाज भी अपनी निद्रा का परित्याग करें और सनातन सभाऐं भी सक्रिय हों।
- बौध, सिक्ख और जैन संगठनों को भी चाहिये कि, वे धर्म प्रचार का कार्य तेजी के साथ करें।
- भारत की आध्यात्मिकता में व्यापकता, सौहार्द्र, सहयोग, उदारता और अहिंसा है। मानवता की रक्षा हेतु हिन्दुत्व की रक्षा करनी आवश्यक है।

शेष पृष्ठ 9 का **नवरात्रि के हर दिन.....**

के लिए मां दुर्गा ने शेर पर सवार हो स्कन्दमाता का रूप लिया। मां का ये रूप संतान के प्रति प्रेम को दिखाता है और सुख और शांति प्रदान करता है।

मां कात्यायिनी : मां के इस रूप की पूजा करने से व्यक्ति के शत्रु दूर होते हैं और कुंवारी कन्या के विवाह में आ रही बाधाएं दूर होती हैं। कात्यान ऋषि के घर जन्म लेने के कारण मां के इस रूप में कात्यायिनी के रूप में पूजा जाता है।

शेष पृष्ठ 1 का **वीर सावरकर के नाम.....**

महासभा के राष्ट्रीय नेताओं ने कहा है कि वामपंथी विचारधारा से भरे जवाहर लाल नेहरू विश्व विद्यालय में इस तरह का नामकरण हिन्दुत्व के लौ को जलाने का काम करेगा। बता दें कि जुलाई २०१६ में जेएनयू कैंपस डेवलपमेंट कमिटी ने एग्जिक्यूटिव काउंसिल के समक्ष विभिन्न सड़कों के नामकरण के लिए गुरु रविदास मार्ग, वीडी सावरकर मार्ग, रानी अब्बक्का मार्ग, अब्दुल हमीद मार्ग, महर्षि वाल्मीकि मार्ग, गार्गी वाचक्नवी मार्ग, रानी झाँसी मार्ग, महर्षि दयानंद सरस्वती मार्ग, गोपीनाथ बोरदोलोई मार्ग, वीर शिवाजी मार्ग, महाराणा प्रताप मार्ग, सरदार पटेल मार्ग, लोकमान्य तिलक मार्ग सहित कई स्वतंत्रता सेनानियों व प्रसिद्ध हस्तियों के नामों पर मार्गों के नाम रखने की सिफारिश की थी।

शेष पृष्ठ 1 का **हिन्दू महासभा ने मध्यप्रदेश.....**

धर्मशाला में अखिल भारत हिन्दू महासभा के उज्जैन इकाई के कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित की गई बैठक में राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा, राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री वीरेश त्यागी, प्रदेश संयोजक श्री मोहनलाल वर्मा, प्रदेश संगठन मंत्री श्री कन्हैयालाल रायकवाड़, श्री शंकरलाल रावत, श्री पंकज रावत, श्री राजू अहिरवार, श्री शिवप्रसाद गुप्ता सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे। बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा

कि केन्द्र सरकार शीघ्र देश में समान नागरिक संहिता, जनसंख्या नियंत्रण कानून एवं गौहत्या को रोकने के लिये केन्द्रीय स्तर पर मजबूत कानून बनाये। उन्होंने कहा कि देश में मुसलमानों को चार विवाह एवं अनगिनत बच्चें पैदा करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। देश में अब दो तरह के कानून स्वीकार्य नहीं किये जायेंगे। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री वीरेश त्यागी ने कहा कि देश में हिन्दुओं का धर्मातंरण व लवजेहाद द्वारा हिन्दू लड़कियों का शोषण बड़े पैमाने पर हो रहा है जिसे तुरंत रोका जाये। मध्यप्रदेश के प्रदेश संयोजक श्री मोहन लाल वर्मा ने कहा कि प्रदेश में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। धनबल से विधायकों को खरीदा जा रहा है, परन्तु जनता की समस्याओं पर कोई भी राजनैतिक दल ध्यान नहीं दे रहा है।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 4 का **हृदय रोग में कोलेस्ट्रोल.....**

होता है।

योग चिकित्सा : कोलेस्ट्रोल बढ़ जाने पर सूक्ष्म–व्यायाम, वक्षस्थल (यथाशक्ति) उत्तानपदासान, पवन मुक्तासन, भुजंगासन, धनुरासन, ऊष्ट्रासन, श्वासन व योग निद्रा का आधा घंटा अभ्यास करें। फिर कपालभाति, अनुलोम विलोम व भ्रामरी प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास किसी योग विशेषज्ञ की देखरेख में करें।

शेष पृष्ठ 5 का **विश्व का सबसे प्राचीन एवं.....**

युवराज विक्रमादित्य ने राष्ट्र की बिखरी शक्तियों को संगठित करके शकों का जोरदार मुकाबला करते हुए पराजित किया। शकों को उनके मूल स्थान अरब में जाकर भी भारत का विजयध्वज लहराया। विक्रमादित्य ने और भी आगे बढ़कर यवन, हूण, कुषाण जातियों पर भी विजय प्राप्त की।

वैदिक शिक्षा का प्रचलन, गोरक्षा, संस्कृत भाषा का उत्थान और विधर्मी बन चुके लोगों की घरवापसी जैसे अनेक राष्ट्रीय अभियानों का झंडा उठाने वाले महर्षि दयानन्द ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की थी। वर्ष प्रतिपदा १ अप्रैल १८८६ को ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार का जन्म भी हुआ जिसने हिन्दू समाज व राष्ट्र को संगठित कर भारत माता के पुनः विश्वगुरु पद पर बिठाकर परम वैभवशाली बनाने का दृढ़ संकल्प किया उसे साकार करने के लिये १९२५ में संघ की स्थापना की। आज वह संगठन विश्व का सबसे बड़ा गैर सरकारी सामाजिक संगठन है। इस प्रकार यह कालगणना भारत की राष्ट्रीय कालगणना है।

शेष पृष्ठ 5 का **नहीं संभले तो कम.....**

❖ कनाडा के जर्नल ऑफ कार्डियोलॉजी में प्रकाशित शोध के अनुसार एक 'एनर्जी ड्रिंक' के एक केन में १३ चम्मच चीनी और इतना ही कैफीन की मात्रा दो कप कॉफी के बराबर होती है। ये युवा शरीर हेतु घातक हो सकती है।

❖ मोबाइल टावरों से निकलने वाला रेडिएशन के खतरों को लेकर आई॰आई॰टी॰ मुम्बई के प्रोफेसर एवं नेसा कंपनी ने एक ऐसी चिप तैयार की है, जो रेडिएशन के अधिक होने को सोख लेगी। सिर्फ आवश्यकतानुसार तरंग पास करेगी।

❖ सूर्य की ऊर्जा से चलने वाला जलहीन शौचालय भारत में प्रारंभ किया गया है। यह शौचालय विश्व भर में उन ढाई अरब लोगों के लिए मददगार सिद्ध होगा जो सुरक्षित व टिकाऊ सफाई व्यवस्था का सामना कर रहे हैं। इस परियोजना के प्रमुख जांचकर्ता और कोलोरडो विश्वविद्यालय के 'प्रोफेसर कार्ल लिंडेन' ने कहा है कि इस शौचालय में मानवीय अपशिष्टों (मल–मूत्र) को इतने अधिक ताप पर गरम करने की क्षमता है, ताकि वह बैक्टीरिया मुक्त हो तो बायोचार बना सकें आदि।

कुछ विचारणीय बिन्दुओं से मेरा अभिप्राय सिर्फ इतना है कि हम व आप इन पर चिन्तन–मनन करते हुए स्वयं में स्वयं से आत्मसात करें और सोचें कि क्या इनका अनुसरण करने से पर्यावरण संतुलित हो सकता है?

शेष पृष्ठ 7 का **हिन्दुस्थान और हिन्दुओं की.....**

वाले दलित युवक को चारपाई से बाँधकर जिंदा जलाया गया। कुंडगुलूर (केरल) में जीतू मोहन नामक पुरुष को मुस्लिम युवती प्रेम करती थी। इसकी ''सजा'' स्वरूप पेट्रोल छिड़क कर आग लगाई गई। ये कुंडगुलूर वही स्थान है, जहाँ चेरामन जामा मस्जिद हिन्दू राजा चेरामन पीरामल द्वारा सन् ६२८ ई. में इब्नदीन मलिक के नेतृत्व में आई मुस्लिम व्यापार मंडल के अनुरोध पर निजी मंदिर की मूर्तियाँ हटाकर उसे मस्जिद के रूप में सौंपा था। इस हिन्दू उदार हृदयता का परिचय जिस शहर में १४०० साल पूर्व दिया गया था, वहाँ आज जीतू मोहन प्रेम की अभिव्यक्ति पर फूंका जाता है।

बंगाल के बशीरहाट, कालियाचक और मालदा में हिन्दुओं का जीना हराम कर दिया गया है। मुस्लिम भीड़ जो चाहे करती है, ममता बनर्जी की पुलिस बगलें झाँकती है। गृह मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार २०१४ से २०१८ के बीच लिचिंग घटनाओं में ३० मुस्लिम तथा २७ हिन्दू मरे। इसमें जम्मू–कश्मीर के आंकड़े शामिल नहीं हैं। घायल होने वालों में ६७ हिन्दू तथा ६४ मुसलमान थे।

स्पष्ट है कि मॉब लिचिंग के कारण हिन्दू उतने ही पीड़ित हैं, जितने मुस्लिम। किन्तु वामपंथी संगठन हिन्दुओं को आक्रामक बताकर उनकी व हिन्दुत्व की प्रतिष्ठा को मारक चोट पहुँचा रहे हैं। संसार में इस कारण भारत का सम्मान गिरे और उसे आर्थिक क्षेत्र में इसके दुष्परिणाम झेलने पड़ें, ये मंशा है हिन्दू–विरोधी कबीले की।

शेष पृष्ठ 2 का **ईश्वर से कैसे.....**

हुआ दिल जो आलूदा हिरसो हवा से, नहीं चमकता फिर वह नूरेखुदा से।

प्रभु से मिलाप तो मनुष्य को प्राप्त ही है और यह सदा उसके समीप है। व्याप्य वस्तु व्यापक से भिन्न नहीं हो सकती। केन्द्र और घेरे का सम्बन्ध सदा से है। अनुचित सांसारिक विचार मनुष्य के चित्त को हर समय परेशान करके तृष्णा से उसकी पवित्रता को बिगाड़ देते हैं। इसलिए बुरे काम की जिम्मेदारी से बचने के लिए जीवन के कार्यक्रम को सत्य तथा उचित प्रकार से बनाना आवश्यक है। मन की शुद्धता के बिना जो पुरूष प्रभु के दर्शन की चेष्टा करता है वह भूल पर है। जब तक मन शुद्ध न हो प्रभु–प्राप्ति नहीं होती। फिर अन्तःकरण प्रकाशित होकर प्रभुदर्शन से स्वयमेव आह्मदित हो जाता है। मन की शुद्धता के बिना प्रभु–प्राप्ति के लिए मनुष्य जिस प्रकार चेष्टा करता है वह सब व्यर्थ हो जाती है। अतः उपासना की विधि चित्त की चंचलता को दूर करके परमेश्वर प्राप्ति के योग्य बना देती है। यदि मनुष्य इस अवस्था को ठीक बना ले, तो ज्ञान पथ की ओर उसका पग बढ़ सकता है, इसके बिना नहीं। इसलिए प्रभु–भक्तों का वचन है–

दिलबर तेरा तेरे आगे खड़ा है, मगर नुक्स तेरी नजर में पड़ा है।

शेष पृष्ठ 8 का **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात्.....**

संवतों को चलाया किंतु भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान केवल विक्रमी संवत् के साथ ही जुड़ी रही। अंग्रेजी शिक्षा–दीक्षा और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण आज भले ही सर्वत्र ईस्वी संवत् का बोलबाला हो और भारतीय तिथि–मासों की काल गणना से लोग अनभिज्ञ होते जा रहे हों परंतु वास्तविकता यह भी है कि देश के सांस्कृतिक पर्व–उत्सव तथा राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, गुरु नानक आदि महापुरुषों की जयंतियाँ आज भी भारतीय काल गणना के हिसाब से ही मनाई जाती हैं, ईस्वी संवत् के अनुसार नहीं। विवाह–मुण्डन का शुभ मुहूर्त हो या श्राद्ध–तर्पण आदि सामाजिक कार्यों का अनुष्ठान, ये सब भारतीय पंचांग पद्धति के अनुसार ही किया जाता है, ईस्वी सन् की तिथियों के अनुसार नहीं।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये

द्विवार्षिक.....300/- रुपये

आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

***पता :-* हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

***नोट :-* केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।**

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77

12 साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता निष्कर्ष दिनांक 25 मार्च से 31 मार्च 2020 तक

यह भी सच है

खूंखार जिहादी संगठन इस्लामिक स्टेट का देश में फैलता मकड़जाल

सहाफत (१५ अक्टूबर) के अनुसार ''राष्ट्रीय जाँच एजेंसी से संबंधित आतंकवाद विरोधी संगठन और स्पेशल टास्क फोर्स की बैठक में राष्ट्रीय जाँच एजेंसी के इंस्पेक्टर जनरल आलोक मित्तल ने बताया कि अब तक देश के आईएसआईएस से संबंधित १२७ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। इनमें से सबसे अधिक लोग तमिलनाडु में पकड़े गए जिनकी संख्या ३३ है। उत्तर प्रदेश में १६, केरल और तेलंगाना में १४ लोग पकड़े गए हैं। इस अधिवेशन में गृह राज्यमंत्री जी किशन रेड्डी, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोवाल और नागालैंड के राज्यपाल आर.एन. रवि भी मौजूद थे। डोवाल ने कहा कि राष्ट्रीय जाँच एजेंसी को आतंकवाद के उन्मूलन के लिए अपनी जाँच को और बेहतर बनाना होगा। उन्होंने यह स्वीकार किया कि राष्ट्रीय जाँच एजेंसी ने कश्मीर में आतंकवाद को रोकने के लिए शानदार काम किया है। राष्ट्रीय जाँच एजेंसी के आलोक मित्तल ने कहा कि गिरफ्तार किए गए लोगों ने यह स्वीकार किया है कि वे जाकिर नाइक के भाषण को सुना करते थे और उसके प्रेरणा से ही वे आतंकवादी गतिविधियों में शामिल हुए हैं। मित्तल ने कहा कि इसके बाद हमने जाकिर नाइक के संगठन इस्लामिक रिसर्च फाउंडेशन के खिलाफ रपट दर्ज करवाई। इसी तरह से जम्मू–कश्मीर में भी कुछ पृथकतावादी नेताओं के खिलाफ मुकदमे दर्ज किए गए हैं और उनको गिरफ्तार भी किया गया है। उन्होंने कहा कि इन पृथकतावादी तत्त्वों को भारत स्थित पाकिस्तान उच्चायोग द्वारा आर्थिक सहायता दी जाती थी। उन्होंने यह दावा किया कि जमात–उल–मुजाहिदीन बांग्लादेश में बिहार, महाराष्ट्र, केरल और कर्नाटक में अपने पैर पसारे हैं और इससे संबंधित १२५ संदिग्ध व्यक्तियों का पता लगाया गया है।''

सियासत (१२ अक्टूबर) के अनुसार ''उत्तर प्रदेश पुलिस ने चार व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। उनके खिलाफ यह आरोप है कि वे विदेशी सूत्रों से प्राप्त होने वाली धनराशि को आतंकवादियों को उपलब्ध कराते थे। उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक ओपी सिंह ने कहा कि इस संबंध में चार व्यक्तियों उम्मेद अली, संजय अग्रवाल, समीर सलमानी और ऐराज अली को गिरफ्तार किया गया है। सरकार को यह सूचना मिली थी कि कुछ लोग नेपाल से धनराशि लाकर उसे राज्य में आतंकवादी गतिविधियाँ भड़काने के लिए आतंकवादी संगठन से जुड़े हुए लोगों तक पहुँचाते हैं। इस पर इन चारों व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है। इनके कब्जे से भारतीय और नेपाली करेंसी भी काफी मात्रा में बरामद हुई है। पूछताछ के दौरान इन लोगों ने बताया कि उनके गिरोह में लखीमपुर खीरी और बरेली के मुमताज फहीम, सिराजुद्दीन और सदाकत अली भी शामिल हैं। उन्होंने यह स्वीकार किया है कि नेपाल में विदेशी सूत्रों द्वारा उन्हें जो धनराशि प्राप्त होती थी उसे वे कमीशन के आधार पर आतंकवादी संगठनों को पहुँचाते थे। उन्होंने बताया कि विदेशों से नेपाल के बैंक खातों में धनराशि ट्रांसफर की जाती थी और इसके लिए इन खातेदारों को पाँच प्रतिशत कमीशन दिया जाता था। बाद में यह धनराशि नेपाल से निकलवाकर भारत लाई जाती थी। उसे भारतीय करेंसी में बदला जाता था। इसके बाद इस धनराशि को उन लोगों तक पहुँचाया जाता था जिनके नामों की सूची काठमांडू में सक्रिय विदेशी सूत्रों द्वारा उपलब्ध करवाई जाती थी। बाद में फहीम और सदाकत इस धनराशि को दिल्ली ले जाते थे जहाँ वे उसे कश्मीर में सक्रिय आतंकवादियों तक पहुँचाते थे। हाल ही में नेपाल के राष्ट्रीय बैंक की जनकपुर शाखा से ४६ लाख रुपये की धनराशि इस गिरोह के हवाले की गई थी ताकि वे इसे आतंकवादी संगठनों तक पहुँचा सकें।'' इंकलाब (१४ अक्टूबर) के अनुसार ''उत्तर प्रदेश पुलिस के आतंकवाद विरोधी संगठन ने नेपाल के माध्यम से देश के आतंकवादी संगठनों को मिलने वाली आर्थिक सहायता के बारे में उच्चस्तरीय जाँच शुरू कर दी है। बताया जाता है कि इस गिरोह में कम–से–कम ५० लोगों का हाथ है। लखीमपुर खीरी की सीमा नेपाल से मिलती है और वहाँ पर आसानी से नेपाली करेंसी को भारतीय करेंसी में बदला जा सकता है। बताया जाता है कि निघासन से पुलिस ने चार लोगों को हिरासत में लिया है जिनके तार पाकिस्तान से जुड़े हुए बताए जाते हैं।''

कबिरा खड़ा बजार में

फिर उठा काग्रेस मे नेतृत्व पर सवाल

हाल ही में ज्योतिरादित्य सिंधिया के रूप में कांग्रेस का एक मजबूत स्तम्भ ढह गया और भारतीय जनता पार्टी का हो गया। इससे न सिर्फ मध्य प्रदेश की सरकार सांसत में आ गई है बल्कि कांग्रेस के आला नेतृत्व पर ऊंगलियां उठनी एक बार फिर शुरू हो गई है। खास बात यह है कि अब कांग्रेस के अंदर से यह आवाज उठनी शुरू हुई। फुसफुसाहटें कुछ समय पहले से सुनाई दे रही थीं, लेकिन फिलहाल कुछ नेताओं ने खुल कर कहा कि लोकसभा चुनाव के बाद तत्कालीन पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी की सोच चाहे जो भी रही हो, लेकिन अगर उन्होंने लोकसभा चुनाव नतीजों के बाद यह स्पष्ट कर दिया कि वह अब पार्टी अध्यक्ष नहीं बने रहना चाहते, तो पार्टी को अपने लिए कोई और अध्यक्ष चुनना ही होगा। देश की सबसे पुरानी पार्टी यह छोटी सी बात समझने को तैयार नहीं है। राहुल गांधी के मना करने के बाद कांग्रेस ने अपना अंतरिम अध्यक्ष भी चुना तो सोनिया गांधी को, जिनका खराब स्वास्थ्य बतौर पार्टी अध्यक्ष उनकी सक्रियता में लगातार बाधक बना हुआ था। दिलचस्प बात यह कि अंतरिम अध्यक्ष की भूमिका में आने के बाद भी उनके पूर्णतरू स्वस्थ होने की बात कभी नहीं कही गई, फिर भी नए अध्यक्ष के चयन की दिशा में कोई पहल उन्होंने अभी तक नहीं की है। सर्वोच्च स्तर पर मौजूद इस दुविधा और अनिश्चय का असर पिछले आम चुनाव के बाद हुए हर विधानसभा चुनाव में पार्टी के प्रदर्शन पर पड़ा है। झारखंड, हरियाणा और महाराष्ट्र के विधानसभा चुनावों में लगा ही नहीं कि पार्टी अपनी पूरी ताकत से चुनाव लड़ रही है। लड़ाई मुख्यतरू स्थानीय नेताओं और पार्टी प्रत्याशियों के भरोसे छोड़ दी गई। इस रवैये का चरम बिंदु दिल्ली में दिखा, जहां २०१३ तक सबसे ताकतवर मानी जाने वाली कांग्रेस महज चार फीसदी वोट पर सिमट गई, जो जमानत जब्ती से भी नीचे का प्रतिशत है। इसके बाद संदीप दीक्षित और शशि थरूर जैसे नेताओं की बेचैनी जरूर सामने आई, लेकिन पार्टी के सर्वोच्च नेतृत्व ने अब भी हरकत में आने का कोई संकेत नहीं दिया है। इससे संदेह होता है कि पार्टी आलाकमान को कांग्रेस से ज्यादा फिक्र कहीं पार्टी के शीर्ष परिवार की तो नहीं है। जाहिर है, कांग्रेस के अंदर संकट उससे कहीं ज्यादा गंभीर है, जितना यह ऊपर से लगता है। पार्टी में अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभालने में सक्षम कई लोग मौजूद हैं, यह बात खुद में बेमानी लगती है। ये सारे सक्षम लोग गांधी परिवार के किसी भी सदस्य का नेतृत्व सहजता से स्वीकार कर लेते हैं, पर खुद यह जिम्मेदारी संभालने को इनमें से एक भी तैयार नहीं होता। कुछ मायनों में इससे मिलती–जुलती स्थिति से अभी आठ साल पहले तक बीजेपी भी गुजर रही थी, मगर उसे असमंजस से बाहर निकालने के लिए आरएसएस का नेतृत्व मौजूद था। कांग्रेस में तो ऐसा कोई बाहरी शक्ति केंद्र भी नहीं है। गांधी–नेहरू परिवार अगर कुछ दिन और अपनी दुविधा से पार नहीं पाता तो खुद को जिंदा रखने के लिए पार्टी को ही कुछ करना होगा। लेकिन पार्टी के भीतर मठाधीशों में कोई हरकत ना होना इस बात का इशारा है कि पार्टी का अब गर्त में जाना निश्चित ही है ।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 25 मार्च से 31 मार्च 2020 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।